

:-:०:❀: श्रीश्रीगौरहरिर्जयति :❀:०:-:

❀ रसचन्द्रिका ❀

कविवरहरदेवजीविरचित

(ब्रजभाषा में)



सम्बत २०२२
मूल्यम्— ३ ~~१०~~
१०

प्रकाशक—
कृष्णदासबाबा
कुसुमसरोवर,
राधाकुंड
(मथुरा)

भूमिका

—५२—

कृष्ण-भक्ति की चैतन्य-सम्प्रदाय-धारा में शताधिक कवि हुए जिनकी एक वृहत् सूची मैंने "संतवाणी" पटना में प्रकाशित कराई थी। पश्चात् श्रीप्रभुदयाल जी मीतल ने कवियों के संक्षिप्त जीवन-वृत्त और उनकी रचनाओं के परिचय को प्रस्तुत कर हिन्दी जगत् का भारी उपकार किया। वस्तुतः बाबा कृष्णदास जी महाराज महान्त ग्वालियरमंदिर, कुमुमसरोवर ने ही ब्रज भाषा की इस विलुप्त धारा का प्राकट्य किया और विद्वानों को अनुसंधान के लिए दौड़ा दिया। प्रस्तुत ग्रंथ उनके द्वारा प्रकाशित ब्रजभाषा ग्रन्थों की ही एक कड़ी है। बहुत दिनों से इस ग्रंथ के प्रकाशन की वे चेष्टा में थे। वृन्दावन निवासी श्रीमान् मन्दकिशोरमुकुट वाले से उन्हें वह कापी मिलि है। ग्रंथ का संक्षिप्त परिचय देना अपना कर्तव्य समझते हैं ॥

हरिदेवजी जाति के अप्रवाल वैश्य थे। संवत् १८६२ में आप का जन्म और संवत् १९१६ की उषेष्ट शुक्ला ११ को आपका शरीर पात हुआ था। मिश्रबन्धु विनोद के अनुसार उनका जन्म काल सं० १८३० और कविता काल सं० १८५७ है किन्तु यह प्रामाणिक नहीं। इनके पिता का नाम रतिराम जी था और वे वृन्दावन में परचूनी की दूकान करते थे। पिता अच्छे काव्य-प्रेमी थे अतः उन्होंने अपने पुत्र हरिदेव के लिए प्रारम्भ से ही उपयुक्त वातावरण बनाया और उन्हें व्यवस्थित काव्य-शिक्षा प्रदान कराई। इनमें काव्यरचना की प्रतिभा थी जिसे उन्होंने अनुशीलन और कवि-समागम से और भी विवर्धित कर लिया। रीतिकालीन कविता में जिस बहुज्ञता, शास्त्र-ज्ञान और शैली के दर्शन होते हैं वह हरिदेव जी के काव्य में भी विद्यमान है। अंतिम चरण में रीति साहित्य वृन्दावन की रसभूमि को अप्रभावित न रख सका। रीतिकालीन ग्वाल-जैसे कवि का सम्पर्क उन्हें मिला ही था। वे भी कुशाग्र बुद्धि के थे ॥

इनके द्वारा रचित ५ ग्रंथों का पता चलता है—(१) रसचन्द्रिका (२) छन्दपयोनिधि (३) काव्यकुतूहल (४) रामश्वमेध और (५) वैद्यसुधाकर । मिश्रबंधुओं ने “छन्दपयोनिधि” और “नायिकालक्षण” का उल्लेख किया है । वस्तुतः रसचन्द्रिका ही नायिका भेद का ग्रंथ ज्ञात होता है । कहा नहीं जा सकता कि रसचन्द्रिका से पृथक् कोई “नायिकालक्षण” ग्रंथ भी हरिदेव जी ने रचा था ॥

रसचन्द्रिका के प्रत्येक प्रसंग की समाप्ति पर हरिदेव जी ने स्वयं को “श्रीराधिका-रमण पदारविद मकरंद पानानंदित अलिद श्रीरतिराम आत्मज” कहा है । आज भी इनकी वंशपरम्परा श्रीराधिकारमण चरणाश्रित है । इस ग्रंथ के अन्त में भिन्न हस्त लेख में जो छन्द संकलित है वह इस बात का प्रमाण है कि ये गौडश्वरसम्प्रदाय में दीक्षित थे ॥

काव्यकुतूहल, रामाश्वमेध और वैद्यसुधानिधि में से रामाश्वमेध श्रीनंदकिशोर मुकुटवालों के पास सुरक्षित है किन्तु उसके लेखक के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता । वैद्यसुधानिधि की हस्तप्रात बाबाकाशीदास जी, वृन्दावन रासमंडल के पास कही जाती है । नीचे इनके दो ग्रंथों का हम परिचय प्रस्तुत करते हैं—(१) छन्दपयोनिधि-पिंगल के आधार पर ब्रजभाषा में रचित यह एक सुंदर रचना है । इस ग्रंथ का सम्बत १६६३ में खेमराज श्रीकृष्णदास के द्वारा “श्रीवैकटेश्वर-स्टीम” प्रेस में प्रकाशित हुआ था । वृन्दावन निवासी महन्त कन्हैयालाल का अनुवाद भी इसके साथ है । इस रचना में आठ “तरंग” हैं, जिनमें छन्दशास्त्र के विभिन्न अंगों का विशद वर्णन हुआ है । प्रथम तरंग में छंद लक्षण, द्वितीय में लघु-गुरु लक्षण, तृतीय में गण-निरूपण, चतुर्थ और पंचम में प्रस्तारादि अष्टांग वर्णन, षष्ठ में गणों और वर्णों के फलाफल तथा सप्तम और अष्टम तरंगों में क्रमशः मात्रा छंदों एवं वर्ण छंदों का सविस्तार विवेचन है । छन्दशास्त्र का ज्ञान पाने के लिए यह उपादेय

ग्रंथ है । कुल छन्द ५४४ हैं ॥

रसचन्द्रिका—यह नायिका भेद और रसभेद का सुन्दर ग्रंथ है । कवित्ता दोहा और सवैया छंद का कवि ने प्रयोग किया है । राधा और कृष्ण को लक्षित कर नायिका तथा नायक के भेद-विभेदों का सानुप्रासिक ललित शैली में वर्णन किया गया है । “भक्तिरसामृतसिधु” और “उज्ज्वलनीलमणि” की परम्परा में न रख कर हम इसे लौकिक काव्यशास्त्रों की शैली में ही रखेंगे । फिर भी कवि शृंगारी कवि नहीं है ! शृंगार के उज्ज्वल रूप का ही वह वर्णन कर मनोविनोद करना चाहता है । राधा-ठकुरायन के पायन को विलोक कर ही वह रचना-प्रवृत्ता हुआ है । वृन्दावन की (उपास्यस्थली) प्रारम्भ में अभ्यर्थना है फिर कालिंदी नदी की । रसों के भेदों का वर्णन देकर आलम्बन और उद्दीपन तथा अनुभावों को वर्णित किया गया है नायिकालक्षण, वसुगुणों का लक्षण, वसुगुणों का निरूपण, रूपलक्षण, गुणलक्षण, शीललक्षण, प्रेमलक्षण, कुललक्षण, वैभवलक्षण, भूषणलक्षण दिखा कर अनुरूप उदाहरण प्रस्तुत किए हैं । राधिका के रूप का उदाहरण द्रष्टव्य है—“कोमलता अरविदन में मकरंद में है मुख वास वसेरो” ।

इत्यादि सवैया द्वारा (पृ० ४ स० १६) में सुन्दर बणोन है ।

अष्टांगवती नायिका, कर्मभेद से नायिका-स्वकीया, अज्ञात-यौवना, ज्ञात-यौवना, नवोद्गा, विश्रब्धा, मुग्धा, मध्या तथा उसके भेद प्रौढ़जीवना, वक्रवचना, प्रौढ़स्मरा, सुरत-विचित्रा, मध्या-सुरतान्ता, मध्याधीरा, मध्या-अधीरा, मध्याधीराधीरा, प्रौढ़ा लक्षण उसके भेद—प्रौढ़ा उन्नतकामा, लज्जाजितप्रौढ़ा, तथा सुरतान्त पश्चात् प्रौढ़ा के धीरादि भेद बताने के बाद कवि ने परकीया के लक्षण बता कर सुंदर उदाहरण दिए हैं । परकीया के विषय में वे लिखते हैं—

रसिक जनन की परकीया, जग में जीवन जान ।

जाके पद रज कन कहूँ, पावत तिया न आन ॥ पृ० १७ दो० ५

(घ)

परकीया भेदों में ऊढ़ा और अनुद्धा और फिर ऊढ़ा के षट् भेदों में गुप्ता-भूत सुरतगोपना, भविष्यसुरतगोपना वर्त्तमानसुरतगोपना, विदग्धा-वचनविदग्धा तथा क्रियाविदग्धा, लक्षिता-स्नेह-लक्षिता और सुरतलक्षिता, मुदिता-अनुशयना-भूत-भविष्य-वर्त्तमान तीन भेद बताकर रसचन्द्रिका में नायिका भेद के पश्चात् कुलटा का बणोन छोड़ दिया है। उससे विरसता आने की सम्भावना थी। सुरति-दुखता, यौवनगर्विता, रूपगर्विता, गुणगर्विता, शीलगर्विता, प्रेमगर्विता, कुलगर्विता, वैभवगर्विता, भूषणगर्विता वर्णन के बाद मानिनी का वर्णन है। कालभेद से वसुनायिकाओं के भेद बताए गए हैं। इनमें स्वाधीनपतिका, मुग्धास्वाधीन, मध्यास्वाधीन, प्रौढ़ास्वाधीन, परकीयास्वाधीन, वासकसज्जा और उस के भेद, उत्का और इस के भेद, खंडिता और उसके भेद, कलहांतरिता और उसके भेद, अभिसारिका और उसके भेद, विप्रलब्धा और उसके भेद, प्रोषितपतिका तथा उसके भेद पश्चात् उत्तमा, मध्यमा, कनिष्ठा, जाति भेद से नायिकाओं के भेद-पत्रिनी, चित्रणी आदि, नायक के लक्षण उसके प्रकार अनुराग, उद्दीपन, सखी उनके कृत्य, सखा और उसके भेद, दूती उसके भेद और कृत्य, षट् ऋतु वर्णन, अनुभाव, और लीलाहावादि उसके भेद, सात्विकभाव, संचारीभाव और अन्त में रसों का वर्णन है। भयानक रस तक पोथी लिखी हुई है, पश्चात् अपूर्ण है। ऐसा लगता है कि यह श्रीहरिदेवजी की साहित्यसाधना का चरम परणति है। हस्त लेख बहुत सुन्दर है। बीच में लेख परिवर्तन भी है। अन्ततः यह रचना साहित्यिक मूल्य की है। आशा है विद्वानों छापे की भूलों को ध्यान में न लाकर इसके काव्यरस का आस्वादन करेंगे। विशिष्ट मूल्यांकन कभी अन्यत्र प्रस्तुत करेंगे।

नरेश बंसल—

हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्रीगणेशडिग्री कालेज
कासगंज (उ० प्र०)

❀ श्रीश्रीराधिकारमणो जयति ❀

❀ अथ रसचन्द्रिका लिख्यते— ❀

कवित्त—अमल कमल से है विमल अनूप पद,
सजल जलज सी नखाल दरसत है ।
जन मन मलिद है मोह मद माते तहाँ,
आनंद अछेह दिन रैन सरसति है ॥
कवि हरिदेव उघरै ही के कपाट कोटि,
का के द्विगता के छवि छाँह परसत हैं ।
सुंदरि सिवाजू कै मंगल करन हार,
मोद भरे गोद में गणेश दरसत हैं ॥१॥

कवित्त—मृदुल अनूप अरुनाई भरे राजै चारु,
अमल अमोल नखपांति दरसाती हैं ।
किसलै मजीठ अरु ईदुबधु तारागन
जलज जलूसन की ओप ढर जाती हैं ॥
कहैं हरिदेव अरि वृंदन के वृंद कहा,
कोटि कोटि ईंदुन की आद गरकाती हैं ।
राधा ठकुरायन के पायन विलोक मेरी,
उकति अनूठी ऊठी भूठी परिजाती हैं ॥२॥

कवित्त—फूले फूले फूलन फवी हैं फुलवारै ओक,
तारै केल वेलन पैं खेल अलिवृंदको !
अगर अगूरै हैं अनारै आम आभावट,
खार कषि जूरै मदचूरै मृदुकंद को ॥
नीवू ओ नरंगी हरिदेव नवरंगी वह,
कहाँ लों गनाऊ नाम फूल फल वृंद को ।
वृंदारक वंदन सो तीन ताप कंदन सो,
नंदन तैं नीको वन राजै नद नंद को ॥३॥

कवित्त—कहर कलिकाल पै लहर प्रचंड तेरी,
 पावक प्रवल जम जूथन के फंद की ।
 अधम अधापी महापापी तीन तापी तोय,
 ताकि तन कन गति पावति सुखंद की ॥
 कहै हरिदेव देव रानी वृहानी निति,
 चाहत निहारवे कों सोभा सुख कंद की ।
 सुर ओ असुर नर नाग नर वंदनी तू,
 पातक निकंदनी है नंदनी कलिंद की ॥४॥

दोहा—श्री वृषभाँन कुमारि के वंदों पद अरविंद ।
 जिन रज रंजित मुदितमन रहत सदा वृजचंद ॥५॥
 दोहा—जगतैं अद्भुत सुष सदन वृहानंद समान ।
 रसिकन को अवलंब है सोई रस सुषदान ॥ ६ ॥
 सो रस नव प्रकार—

दोहा—गिन सिंगार अरु हास्य कहि, करुणा रुद्र बिषान ।
 वीर भीर वीभत्स अरु, अद्भुत सांत वषान ॥ ७ ॥
 नव रस परम पुनीत पै, है सिंगार रसराज ।
 तासु देवता है सकल, देवन को सिरताज ॥ ८ ॥
 सो पहलै वरनन करौ, अपनी मति अनुसार ।
 रसिक दास मोहि जान कै, लैगे चूक सम्हार ॥ ९ ॥

छप्पै—आलंबन नव जुगल जानि उद्दीपन ये सुनि ।
 षट रितु चंदन चंद राग रागिन सुगंध पुन ॥
 कटाक्षादि अनुभाव वरन सात्विक श्रमहारी ।
 लज्जा उत्कंठादि जानि निद्रा संचारी ॥
 दोहा—रति अस्थाई भाव है स्याम वरन सोई देव गिन ।
 सिंगार हरि देव इम, उभै संजोग वियोग गिन ॥१०॥

अलिवन श्रंगार के दंपति दरस उदार ।
 तिनके लक्षन लक्ष अब वरनू मति अनुसार ॥ ११ ॥
 तिन में नीकी नायका, नायकता आधीन ।
 सो पहलै वरनन करौ सुनियों रसिक प्रवीन ॥ १२ ॥

अथ नायकालक्षण—
 दोहा—जाहे देखैं रसिकन हियैं मधुग रति सरसाय ।
 वसु गुन संजुत रसिकनी, कहै नायका ताय ॥ १३ ॥

अथ वसुगुन निरूपन—
 दोहा—प्रथमहि जोवन रूप गुन सील प्रेम पहचान ।
 कुल वैभव भूषन बहुर, ये वसु गुन जिय जान ॥१४॥

अथ जोवनलक्षण—
 दोहा—बालापन कौ भेद कै, छवि को होय अहूर ।
 जग मोहै दिन दिन वढै, जोवन जान जरूर ॥१५॥

स०—इक गोपी लखी रंग ओपी लला, अंग ताके परी कछू रोरही सी ।
 कुच चाहैं गहौ रवि के रथ कौं, द्विग कांननि कौं करें दोरही सी ॥
 वलि नेरैं हूँ नैक निहारियै तो, रह जाति महामति बोरही सी ।
 छिन में छवि देखियै और कछू छिन में फिर और तैं और ही सी ॥१६॥

अथ रूपलक्षण—
 दोहा—देखत ही मन कौं हरै बहु सुख पावैं नैन ।
 होय जगत आधीन जहि, रूप वखानहु अैन ॥१७॥

कवित्त—रंभासी सचीसी उरवसीसी न तूल होत;
 देखि छवि भूल होत बधू मै न केरीसी ।
 समता न पावे एक तिलहू तिलोतमासी,
 रूप रूप कामिनि न होत नैक नेरीसी ॥
 एरी हरिदेव की सौं तेरे अंग अंगन की,
 सुषमा विलोक लोक हारी मति मेरीसी ॥

दीन भयो चंपावन कंचन कमीन भयो,

चंद भयो चाकर चिराकैं भई चेरी सी ॥१८॥

स०-कोमलता अरविंदन में, मकरंद में है मुख वास वसेरो ।

कञ्चन में तन की दुति राजत, चंचलता सफरीन में हेरो ॥

त्यों हरिदेव सुजान की सौं, सुभ गौन गयंदन में अटकेरो ।

जोत की ज्वाल मसालन में, अरु चंद में चारु प्रकास है तेरो ॥१९॥

अथ गुनलक्षण—

दोहा—कायक वाचक कर्म कर बीधै सब को चित्ता ।

करै प्रसंसा जगति सब, सो गुनि जानहु मित्ता ॥ २० ॥

स०-कोर कला नवलान रंची, रचि भूषण भावनि भेद नवीनो ।

मैनका सी रमणी कमनीय, भई बलिहार भयो न अधीनो ॥

बीस बिसे वृषभान सुता, तुम जानत हो कोऊ तंत्र नवीनों ।

तीनहूँ लोकन को मनमोहन, एक विलोकन हीं वसकीनों ॥२१॥

सेस सुरेस दिनेस महेस, निहारै सदां जाहे की द्रिग कोरैं ॥

जै जै भये हैं वली भुवमंडल ते सब तासु कृपा की हिलोरैं ॥

कंपत हैं भ्रुव वंक विलास तैं, दानव देव दिगीसन थोरैं ।

सो वृज गोप वधू के अधीन, हूँ ठाड़े हैं आपहु हूँ कर जोरैं ॥२२॥

अथ सीललक्षण—

दोहा—कोमल बचन प्रसन्न मन, संयम जनरंजन भाय ।

दीन दया थिरता छिमा, इहि कहि सील सुभाय ॥२३॥

स०-सील की सागर रूप उजागर, नागरि तो उपमा नहि जोर कौं ।

भौरन कौं अरविंदन ज्यों सुखदा, नित आप सखिन की ओर कौं ॥

देखै ससी के बढै सुख जो, कुवलय वन कौं अरु चुंग चकोर कौं ।

सो सुख होत लखे तब आननि, सो तन कौं अरु नंदकिसोर कौं ॥२४॥

अथ प्रेमलक्षण—

दोहा—सदा एक रस रहत हैं, तन मन वचनन प्रीति ।

बढ़ै नेह नित नित नयो, जानसु प्रेम प्रतीत ॥२५॥

कवित्ता—भीजे हैं अनंग रंग रंगन उमंग दोऊ,

दोऊन कैं अंग जोत जोवन जगी रहै ।

वैठे एक सेज दोऊ अंगन सौं अंग लाय,

हाय हाय तौऊ चित चाह उमगी रहै ॥

है कर अधीर भारी धीर न धरति दोऊ,

पलकनि ओट दीठ दीठ सौं खगी रहै ।

राधे राधे राधे रट लगी रहै माधो मन,

माधो माधो माधो रट राधे कों लगी रहै ॥२६॥

अथ कुललक्षण—

दोहा—गुरुजन पूजन धर्म पुनि, लोने लोक बिचार ।

लाज काज गौरव तहाँ, हैं कुल के व्योहार ॥२७॥

स०-केसर कंचन को रंग लै अरु, सुद्ध सुवासौं लई मधुराई ।

चंद को चारु प्रकास विकास, सरोरुह के वन को सुखदाई ॥

सील लयो गिरजाको अहे, हरिदेव हि त हित मूरत पाई ।

सोध सवै वसुधा की सुधा, जसुधा की वधू विधि तोय बनाई ॥२८॥

अथ वैभवलक्षण—

दोहा—जहाँ सहज संपति सुसुख, प्रभुता नित निकेत ।

थिरता गत गंभीरता, वैभव जान सचेत ॥२९॥

कवित्ता—रंभासी सचीसी उरवसीसी अनेक तहाँ,

पन्नगी नगीसी कोटि कोटिन सु आलरै ।

रूप कैसी कामिनी हैं मैने भाभिनी सी कोऊ,

सुंदर सुहावनी हैं जोवन की जालरै ॥

कहै हरिदेव जुरी भौन महारानी जू कैं,

सेवत सरस रूप रस की विसाल रै ।

लालनि की माल दिव्य दीपत रसाल तने,

बादलाचदोवे मणि मोतिन की माल रै ॥३०॥

बारन के भार ही समार न सकति कहा,
 आभरन भार को वयान करियतु है ।
 धोर धरो चंदन सुवास अंग लायवेकों,
 सरस सुगंध ही तें वोभ मरियतु है ॥
 नीचै परजंक तें चले के हेतु चायन सों,
 मखमल बिछायन सुमन भरियतु है ।
 भिभक भिभक नीठ मोठ तोऊ मेरी वीर,
 कोलदल पावडे न पाय धरियतु है ॥३१॥

अथ भूषन लक्षण—

दोहा—चमत्कार रचना रुचिर माजै बहु विध अंग ।

भूषन भेष विसेष कहि, अलंकार रस रंग ॥ ३१ ॥

स०—जाते चली मग कुंजन के गल, गुंज केहार गयंद सी गैल हैं ।
 कंदुक से कुच वैनी फनंद सी वंदन बिंदु महासुख दैन हैं ॥
 देखिये श्रीहरिदेवलला चलि, रूप की रासि रची बिधि अन हैं ।
 वैन सुधा से सुधानिधि सो मुख खंजन से मन रंजन नैन हैं ॥३३॥

पुनि—छोटी सी वैस बड़े बड़े नैन उठौ है उरोज महा सुखकारी ।
 नूपुर किकनी हारनि की, भंनकार सु मो मन मोहन हारी ॥
 को हुती काल्ह बतावै नरी किन संग सखी तन तास की सारी ।
 केसर आड दिये सजनी, नक वेसर ही बड़े मोतिन वारी ॥३४॥

अथ अष्टांगवती नायिका—

स०—जोवन जोति जगी अंग अंग विलोकि अनंग की कामिनि वारी ।
 मोह रहौ जग को मन मोहन, सील सनेह सुभाय निहारी ॥
 हो कुल की मरजाद सरूप, सो रूप को रूप अनूप कहारी ।
 भूषन भूष तिहारी करें, तुम भूषन की नित भूषन प्यारी ३५॥
 दोहा—यह विध आठौ अंग कर, पूरन नारि जु होय ।
 ताही वरनों नायिका, वरनति हैं कविलोय ॥३६॥

केशव आदि महाकविनु, वरनी अमित प्रकार ।
 सो अब मैं वरनन करों, अपनी मति अनुसार ॥३७॥
 पाँचभेद कर नायका, वरनत जिनै विवेक ।
 भेद भेद प्रित होत हैं, अंतर भेद अनेक ॥३८॥
 कर्मभेद वयभेद पुनि, काल सुभाव वखान ।
 जातभेद कर नायिका, वरनत पाँच सुजान ॥३९॥

अथ कर्मभेद नायिका—

दोहा—कर्मभेद कर नायिका, वरनू तीन प्रकार ।

सुकिया इक पुन परकिया, सामान्या निरधार ॥४०॥

अथ सुकिया लक्षण—

दोहा—रहै जु संपत विपत हू, सदां एक उनहार ।

जानै निज पति देवता, सोई सुकिया नारि ॥४१॥

कवित्ता—प्रीतम कौ प्रेम है कै नैम है पतिव्रत कौ,

सुषकौ सकेत वृज लोचन की तारिका ।

कैधों सील सागर की बाधी है मृजाद विध,

कैधों ये हित जन के हित की है कारिका ।

कवि हरिदेव कै सचाई गुरु लोगन की,

सोतन के हिय की हवाई हृद पारिका ।

कैधों नंदनंदन के नैनन की सिद्ध निद्र,

नंदघर कीरति कै कीरति कुमारिका ॥४२॥

दोहा—होत अवस्था भेद कर, त्रिविध नायका सोय ।

मुग्धा इक मध्या दुतिय, तीजे प्रौढ़ा जोय ॥४३॥

प्रगटति आवै तरुनई, नई जासु के अंग ।

ताको मुग्धा नायिका, वरनत हैं रस रंग ॥४४॥

स०—जीतो कछु रंग चंपक को अंग, आप कछु सरसी है मनोज की ।

कुंदकली की दली सजनी, विरंच थली उकसान उरोज की ॥

त्यों सिर सों दिग कानन आनि, सुहान लगी बतिया रस चोज की ।
छीन करी दिन द्वै इकतैं, मुष नैं सुषमा ससि की औ सरोज की ॥४५॥

जान लगी सिसुता तन तै, अब आमनहार भई तरुनाई ।
वैन मिठान लगेरी भद्रजु, फिरी अंग अंग अनंग दुहाई ॥

श्रीहरिदेव सुजान भये, बसरी लषिकैं तव सुंदरताई ।
नायदई नव नागरितैं, इति सौत सषीन के नैन लुनाई ॥४६॥

दोहा—ता मुग्धा के भेद द्वै, वरनत हैं कविलोय ।

अज्ञात जोवना एक पुन, ज्ञात जोवना होय ॥४७॥

अथ अज्ञात जोवना लक्षण—

दोहा—जोवन आवै देह में, ताय न जानति वाम ।

अज्ञात जोवना नायका, ताहि कहै बुध धाम ॥४८॥

कबिता—काल्ह की परोतैं गत ओर ही भई है वीर,

संग सषियन के खेलन सुहावैरी ।

चातक की बानी सुन पुलक पसीजै गात,

धीर न धरात मन धीर न धरावैरी ॥

त्यों ही हरिदेव को सौं उठी है हमारै उर,

आन कै बिथा सो पेष रोई तन तावैरी ।

जानत न मैं हूँ तू तौ जानत है मेरी वीर,

वेदन कहा है या कौ भेद न बतावैरी ॥४९॥

अथ ज्ञात जोवना लक्षण—

जोवन अपनी देह में, आयौ जानत जोय ।

ज्ञात जोवना नायका, ताहि कहैं कविलोय । ५०॥

स०—लै कर फूल गुलाब को फूल सी, बैठ ही बालि हिये अनुरागैं ।

लो वत आपने अंग के रंग सों, देख सखी यों कहो बड़भागैं ॥

होत कहा सम है री भद्र यहि, जोवन जोत जगामग जागैं ।

आव गयी दव एरी गुलाब की, तेरी सों तेरी गुराई के आगैं ॥५१॥

दोहा—ज्ञात जोवना नारि के उभय भेद रसिखान ।

एक नवोढा नारि पुनि, विश्रद्ध नवोढा जान ॥५२॥

अथ नवोढा लक्षण—

दोहा—मुग्धा तिय भै लाज जुत, पति रति सौ न पत्याय ।

ताहि नवोढा नायका, बरनै कवि समुदाय ॥५३॥

स०—लाई सखी भुज मेल गलै, पुनि ठेल गई वह केल की जागैं ।

वांह गही उठ नंद के नंदन, सेज समीप लई अनुरागैं ॥

फेर करी बिनती रति की, पलटी दुति आनन की तहि जागैं ।

सोभ सरोवर में सरसीरुह, सूषत ज्यों हिम बात के लागैं ॥५४॥

स०—आली गई करकैं धर भीतर, धीर वधाय वधाय कितीबी ।

भाजी तऊ तिय होय ससंक, भरी पिय अंक उठी करसीबी ॥

हार परे हरिदेवहु हा, कार सौह न घात दिषाय गरीबी ।

चूमन देत नहीं मुख सुंदरि, छूवन देत नहीं कर नीबी ॥५५॥

अथ विश्रद्ध नवोढा लक्षण—

दोहा—होय नवोढा की कछु, प्रीतम सों पतयान ।

विश्रद्ध नवोढा नायका, तासों कहै सुजान ॥५६॥

कवित्त—ज्यों ज्यों हूँ निसंक भरौ चाहै अंक प्यारो तीय,

त्यों त्यों परजंक तें धरनि धसकति हैं ।

फैल फैल जात गात गात सौं न लावैं नैक,

ओछे कुच करि की करनि असकत हैं ॥

चाहै मुख चंद सौं मिलायौ ब्रजचंद मुख,

भरन हिये कि यो अरन मसकत हैं ।

नाह नेह नद मैं अनद है दभोयो तोऊ,

नीती गहै सीबी की करन कसकत हैं ॥५७॥

सुरतारंभ याई सौं जानि लीजै ॥

अथ मुग्धा को सुरतांत—

स०—केलि के भौन तैं वालि कढ़ी, सुगई सजनी जन मै भपटानी ।
छूट परी लट एक महा छवि, गोल कपोलन में दपटानी ॥
सो सुषमा हरिदेव हियै, उपमा तिहू लोकन में न पटानी ।
हेत अमीउ उरोज पै आन, मनौ फनराज वधू लपटानी ॥
इतिमुग्धा ॥ ५८ ॥

अथ मध्या लक्षण—

दोहा—होत सरोज मुखीन में, लाज मनोज समान ।
ताको मध्या नायका, वरनत सुकवि सुजान ॥ ५९ ॥

स०—खेलत चोपर चंदमुखी, मिल संग सखीन के रंग रहौरी ।
आये तहाँ हरिदेव लला, ललना के हिये में सकोच भयोरी ॥
जान कै जी की सुजान जवै, चलिगै घर यों सजनी न कहौरी ।
लालि की दीठि परी आगया पर, वाल की दीठि दिया परदौरी ॥ ६० ॥
स०—यह एक ही चाह रहै चित्त में नित, देखियै प्यारे की रूप छटा ।
पन कीजै कहारी अरी सजनी, उनही रहै नैननि लाज घटा ॥
इम देखै बने न अदेखै कहू कल, या दुःख की कछु हैरी जटा ।
अरी लाज मनोज के बीच परयो, मन मेरौ भ्रमै नट कौ सो वटा ॥ ६१ ॥

अथ मध्या भेद—

दोहा—प्रौढ जोवना एक पुनि, वक्र सुवचना जान ।
प्रौढ स्मरा नायका, सुरत विचित्रा मान ॥ ६२ ॥

अथ प्रौढ जोवना लक्षण—

स०—जोवन रूप की रास रची, विध अंग सुवास छये छल छोना ।
दीपत सों दव जात रमा, रति कंचन सों तन जात कहौ ना ॥
रूप रसासब पीवन कों, उठ आतुर लाल करो द्विग दोना ।
आवतु चंदमुखी चल यों, लखि लाजत मत्ता गयंद के छोना ॥ ६३ ॥

अथ वक्रवचना लक्षण—

दोहा—वक्र सुवचना नायका, है पिय को सुखदान ।
वचननि माहि उगाहनो, देत नैन भौ तान ॥ ६४ ॥

स०—भोरही तैं मडरात कहा, तुम जानत जोन इहा वन वारी ।
जोवन रूप अनूप भरी, रति सी रमनी मन मोहन हारी ॥
जावो यहाँ तैं न आवो इतै, कित हाथ चलावत हो जू बिहारी ।
दूटै हरा फट है कहूं कंचुकी, लागत वान भली न तिहारी ॥ ६५ ॥

अथ प्रौढ स्मरा लक्षण—

दोहा०—ता सुंदर के अंग में, भलकै रंग अनंग ।
प्रौढ स्मरा नायका, ताहि कहै रसरंग ॥ ६६ ॥

स०—फूलन के कहै भूल कोऊ, मत मेरी तो ये अनुमान करे हैं ।
नैन हीं काम के वान महान, सुजान भलै परसां न धरै हैं ॥
कारे अरी कजरारे नहीं हैं, विसारे महा विस ही सों भरे हैं ।
एक विलोक नहीं अवलोकत, री नदलाल विहाल करे हैं ॥ ६७ ॥

अथ सुरत विचित्रा—

दोहा०—जाको सुरत विचित्र अति, सुरत विचित्रा जोय ।
जानै कोक कलादि कछु, मन भांमन रति होय ॥ ६८ ॥
स०—आई हौ देख अवै रंग भौन तैं, दंपति केलि कलोल समाजै ।
आसन चुंबन में रद दान, करै कलि कोकि कला सुख साजै ॥
नूपुर की भनकारन सों मिलि, यों विछुवान की होत अवाजै ।
बाजे विजै के बजै सजनी, जनु मैं न महीपति के दरवाजै ॥ ६९ ॥

अथ मध्या को सुरतांत—

स०—प्रात उठी रति रंग कियै, रुच रोचन की जुग नैन विसाल मैं ।
पीक की लीक निहारि कपोलन, पोंछन सो कर ओट दुसाल मैं ॥
खूटे उरोज लसै हरिदेवजू, यों विथुरे सुथरे कच जाल मैं ।
मानसचान की संक हियै, जनु आन छिपे जुग कोकिसिवाल मैं ॥ ७० ॥

स०-केल कै नागर प्रात उठी, तव दीपत फैल रही रंग भौना ।
 वृक्षत आय सखी हस कै, तिन सौं सुख रात कौं जात कहौना ॥
 छूट रही अलि कै हरि यौं, बलखाय फवी मुख के चहु कौना ।
 हेत अमी के तमीपति पै, चहुटे जनु आव फनीपति छौना ॥७१॥
 अथ मध्याधीरादि भेद—

दोहा—सगरी मध्या तीन बिध, धीरा और अधीर ।
 धीरा-धीरा तीसरी बरनत हैं बुध वीर ॥ ७२ ॥

अथ धीरा लक्षण—

दोहा—मध्या धीरा वक्रवच, प्रगट रिसाय अधीर ।
 रोय जनावै कोप सो, मध्या धीरा धीर ॥७३॥

कवित्त—आये मन भामन भुराने भोन भागन सौं,

भासत भभू कैसी भुजंग मणकादू है ।
 कैधों वडवानल की लपटी लपट आय,
 कैधों अवलान के उचाटन को सादू है ॥
 करिकें बिचार हम हारी हरिदेव की सौं,
 होत निरधार नाहि बाढ़त बिषादू है ।
 हा हा कहो लालन ये रावरे के नैननि में,
 मंत्र है कि तंत्र है कि जंत्र है कि जादू है ॥७४॥

अथ मध्या अधीरा—

स०-कीये अपराध अगाध महा, वह मैं न असाध समाध के टारन ।
 एक ही पावक नैन उधारि, कियो हरनै तव तासु को मारन ॥
 आपको कोन बन्यो हमसों, अघ सोक हियै तज कोप करारन ।
 द्वै द्विग पावक पुंज कियै, तुम आये लला अबलान कौं जारन ॥७५॥
 अथ मध्याधीराधीरा—

स०-पीक की लीक लगि लष सुंदरि, लाल के लाल कपोलन ऊपर ।
 कोप बढ़ौ तिय के उर में, भरि आयो हियो गौ कहौ न कछू पर ॥

यो असुवा वरुनी लग आय, परै पुनि धाय उरोजन ऊपर ।
 डारति बिंदु अमी के मनो, सस कंजन के कल कान के ऊपर ॥७६॥

अथ प्रौढा लक्षण—

दोहा—केलि कला में अति निपुन, भरी काम के भार ।

सोई प्रौढा नायिका, बरनत सुकवि उदार ॥७७॥

स०-है कै निरंतर अंक भरौं, पिय अंतर नैंक नहीं अव राषौं ।
 भूषन ऊष मयूष पियूष की, एक इही अधरामृत चाषौं ॥
 श्रीहरिदेव सुजान सुनौ, जीय के अभिलाष कहाँ लगि भाषौं ।
 आवतु यो मन में तुमैं लालन, लै उर कौ कठला कर राषौं ॥७८॥

अथ प्रौढा के भेद—

दोहा—प्रौढा उन्नत जोवना, उन्नत कामा जान ।

पुन समस्त रस कोविदा, लज्जाजित उर आन ॥७९॥

अथ प्रौढा उन्नत जोवना लक्षण—

दोहा—प्रौढा उन्नत जोवना, तासौं कहत सुजान ।

पूरन जोवन अंग उर, राजै काम कलान ॥८०॥

कवित्त—सारी स्वेत सुंदरि समारी है किनारी दार,
 जारीदार कंचुकी उरोजन पै धारी है ।

सारस मराल गज चाल सौं रहे हैं लाज,
 आनन अनूप आभा ससि की विसारी है ॥

देवी है कि दानवी है मानवी न होय ऐसी,
 रंभा रमा रति सी तिलोत्तमा सी वारी है ।

रूप की दुलारी सी है महा सुकुमारी ताहि,
 देषौ वनमारी वनवारो में सिधारी है ॥८१॥

कठिन कठोर है अडोल अरवीले महा,
 रति जंग विजै के उछाह अवलाषे हैं ।

मनमथ महावत के सुंदरि सुहाव तेसे ,
 नख दान अंकुस तें अंक मनमाषे हैं ॥
 कीने हैं अधीन हरिदेव नंदनंदन से,
 ऐसे रसलीन गुन जात कापै भाषे हैं ।
 सोतिनके गरुवे गरूर मद गंजबेको,
 उन्नत उरोज ही मत्तंग कर राषे हैं ॥८२॥

स०-भाग जगै पहुमी के छुवै, पद कोमल कंज लगै किम तातैं ।
 रूप की राशि अनूप रची बिध, ओप सची की लजात है जातैं ॥
 है रति में रति सी हरिदेव जू, जानत काम कलान की घातैं ।
 जान बड़ी है बड़े कुल की, वह नैन बड़े हैं बड़ी बड़ी बातैं ॥८३॥

अथ प्रौढा उन्नतकामा लक्षण--

दोहा-उन्नत कामा नायका, ताहि जानियै जान ।

ताहि निरंतर प्रान प्रिय, भावै श्याम सुजान ॥८४॥

कवित्त—पोढी पर जंक पै मयंक मुखी आनंद सौं,

लागी लकलंक सौं निसंक अंक नटके ।

कीने कलि कोक की कलान के अनंत भेद,

जाघन सों जाय जोर लंक लंक लटके ॥

कहै हरिदेव त्यों कटे हैं कंज कोसन तैं,

भोये मकरंद में अलिंद आय भटके ।

देख प्रान प्यारी के प्रान से कढ़े हैं फेर,

बान से गढ़े हैं वे गुलाबन के चटके ॥८५॥

स०-फूल उठे अरविंदन के वन, वंद अलिंदन की अलि छूटी ।

होत गुलाबन की चटका, सुदिसा चकई चक्रवान की खूटी ॥

ओप निसापति की हरिदेव, छिपी रव की छवि छाजति छूटी ।

तोऊ रही ललचाय सखी, दुहूँ ओर दुहून की दीठ अनूठी ॥८६॥

अथ समस्त रस कोविदा लक्षण—

दोहा-सो समस्त रस कोविदा, वरनै कवि हरिदेव ।

पिय कौ देत अनंत सुख, जानै बहु रस भेव ॥८७॥

कवित्त—आज मणि मंदिर में सुंदरि रची है केलि,

आनंद सकेल रति मैं न मन रुदै हैं ।

करकैं अधि ऊरध उतान विपरीत समै,

देत प्रान प्रीतम के नैन वात हूदै हैं ॥

कहै हरिदेव मोती मांगतें परे हैं फैल,

लागत उरोजन के अप्र इम सूदे हैं ।

मानो निसनायक कौ लायक हुकुम पाय,

कंज कल कान पै नक्षत्र कोप कूदे हैं ॥८८॥

लज्जाजित प्रौढा लक्षण—

दोहा-रस के बस प्रिय कौं करै, गुरुजन मानै कान ।

लाजति रस कारक जो तिय, लज्जाजित उरआन ॥८९॥

स०-कोन मिठास भरचौ इनमें, तिनकों तज नैननि देखै पियूषै ।

लाज न जात गडी हम तो, तव देख सषी मधुरै सर ऊषै ॥

होत हरे हरिदेव छिनै छिन, कोर उपाय कीये नहि सूषै ।

काल्ह लगे अधरा रद के, छद लालन सो अजहूँ लागि दूषै ॥९०॥

अथ प्रौढा को सुरतारंभ—

कवित्त—आज मणि मंदिर में रची विपरीत रति,

मंद मंद वाजै काट किंकनी रसीली की ।

जोबन की जुमक लुमक मुख चूम लेत,

काम की कुमष पै हुमक अरवीली की ॥

कहै हरिदेव तैसी बीच नील अंबर के,

राजत है लोल वैनी पीठ गरवीली की ।

उछल उछल छवि छित पै छपाक जनु,

छाजत छिपामैं छवि पन्नगी छवीली की ॥९१॥

स०-केल के भोन तैं भोर कढी, जु गई रंग भौन बधू वृजराज की ।
राजत आन सखी गन में जनु सुंदरिता इतनी रसरजकी ॥
ऊँचे उरोजन बीच फवी, हरि यौ सुष मानष रेषद राज की ।
राह के त्रास मनो दुवकी, जुग मेरन बीच कला दुजराज की ॥६२॥
अथ प्रौढा के धीरादि भेद—

दोहा—प्रौढा धीरा नाह सौं, कोप न करै प्रकास ।

आवत अति आदर करै, रति तैं रहैं उदास ॥६३॥

स० आवत देखि पिया रसिया को, तिया अति आदर कै सनमानो ।
आसन दैकै सुबास धरै, ढिग वीरी बनावन में चित आनौ ॥
जान कै जीकी सुजान जवै, हरिदेव कहौ हस है सुखदानौ ।
है अपराध हमारो कहा, तुम कोप अगाध प्रिया उर आनौ ॥६४॥
अथ प्रौढा अधीरा लक्षण—

दोहा—भुक करि डाटति रिस भरी, पतहि दिखावै त्रास ।

प्रौढा नारि अधीर सो, वरनत बुद्धि विलास ॥६५॥

स०-देव परी तुम कौं नित की, हम कौं समझावत ही दिन जोई ।
जावो जहाँ तैं भलैं कटि कै, करियै अब जो तुमरे मन भाई ॥
काम कहा हम सों तुम सों, कहनावत साच यहै चलि आई ।
राषहु मेल कपूर में ओप न हींग न होत सुगंधित भाई ॥६६॥
अथ प्रौढाधीराधीरा लक्षण—

दोहा—त्रास दिखा व तु पीय कौ, रति तै रहै उदास ।

प्रौढा धीरा धीर सों, वरनत बुद्धि विलास ॥६७॥

स०-आवत प्रात प्रिया पत की, अखियान कछु अरुनाई निहारी ।
जान कै जान चली ढिग सौं, उठ वीरी बनावन के मिस प्यारी
त्यों हरिदेव गहे झपटें, कुच कानन केलि की बात उचारी ।
खाज कै खैचत वैन दलाल कै, वाल नैं माल गुलाब कीमारी ॥६८॥
इति धीरा ॥

दोहा—द्वै प्यारी एक पिय कै, ममता भेद वखान ।

घटहित नारि कनिष्ठा, बडो सुजेष्टा जान ॥६९॥

स०-भुम भुकी लतिका चहुँ ओरन, चूवत है रंग कोल कली को ।
आख महीचनी खेल तहा, हरिदेव रचौ बहुभाँत भली को ॥
देखिन कौ छर छंद चलौ, छिप नंद के नंदन छैल छली को ।
मूंद रहौ द्विग एक के यो, पुनि चूम रहौ मुख एक अली को ॥१००॥
इति श्रीराधिकारमणपदारविदमकरंद पानानंदित अलिंद श्री-
रतीराम आत्मज कवि हरिदेव-विरचितायां रसचन्द्रिकायां
सुकियानमे अवस्थादि भेद निरूपनं नाम प्रथमो प्रभा ॥



अथ परकीया—

दोहा—दुरै दुरै पर पुरष सौं, करै नारि जो प्रीत ।

परकीया तासों कहें, रसिक राव रस रीत ॥ १ ॥

जो रस भैयुत प्रीत में, सो रस अंत न जान ।

तातैं भैयुत प्रीत कों, चाहत रसिक सुजान ॥ २ ॥

जहाँ सरस रति नेह गत, रति पति हित अनुकूल ।

ताई तैं रसिकन मतैं, परकीया सुख मूल ॥ ३ ॥

मुख्य पदारथ जगत में, सोई दुरलभ जान ।

ताई तैं सब तियन में, परकिया परधान ॥ ४ ॥

रसिक जनन की परकिया, जग में जीवन जान ।

जा के पद रज कन कहू, पावत तिया न आन ॥ ५ ॥

ताकौ अब बरनन करौ, अपनी मति अनुकूल ।

हा हा रसिक सुधारियै, होय जो मेरी भूल ॥ ६ ॥

स०-द्विग मानैं नहि छवि देषे बिना, दवये गुरुलोगन में रहनों ।

इन सोच बिचारन ही निस द्योस, खरे विरहागन में दहनों ॥

अब चोच दहा यन मैं बस कैं, कसि प्रीत के पंथ परचौ बहनों ।
सहनौ सो सबै अपने सिर पै, दुख लाल कहा तुम सौ कहनों ॥९॥
दोहा—सो परकीया भाँति द्वै, उठा और अनूढ़ ।
व्याही ऊठा जानिये, अनव्याही अनऊढ़ ॥ ८ ॥

अथ ऊठा लक्षण—

स०—सास ओ नंद रिसानी रहौ, सुजिठानी रहौ किन कीनै मरोर ।
चवाई चवाय करोई करौ, फिरौ डोडी दिये बसुधान के छोर ॥
अपन एक ठटी हम तो, अब लाज की लेज भली बिध तोर ।
किये वृजचंद अनंद के कंद के, आननु ईंदु के नैन चकोर ॥६॥

अथ अनूठा लक्षण—

स०—बालपने तैं सदा जहि के संग, खेलन मैं दिन रैन बिहाई ।
माय न धाय खिजी कबहू, कढ़ि कुंजन तैं प्रति कुंजन जाई ॥
सो अब वा हरिदेव सुजान को, आनन इंदु महासुख दाई ।
नैक निहारैं कलंक लगै, यह वैरिन वैस कहा चलि आई ॥१०॥

दोहा—होत अनूठा एक ही, ऊठा के षट भेद ।
तिन के लक्षण लक्ष सब, कहूँ सुनौ तज खेद ॥ ११ ॥
गुप्त विदुग्धा लक्षता, मुदिता सुखद बखान ।
अनुसैना पांची, छटी कुलटा नारि प्रमान ॥ १२ ॥

अथ गुप्ता लक्षण—

दोहा—भयौ जु द्वै द्वै होत है, सुरत भेद ये तीन ।
कह कछु इनै छिपावही, गुप्ता नारि प्रवीन ॥१३॥

भूतसुरत गोपना—

स०—फूलन के हित आज गई, वन कुंजन मैं मन मानि उमायौ ।
चोरत चीर फटे सजनी, अरु आन अलिदनु घेरु मचायौ ॥

भाज थकी हरिदेव की सौं, अब सांभ परैं घर मैं नियरायौ ।
भीजे दुकूल प्रश्वेदन सौं तन खेद भयौरी महा दुख पायौ ॥१४॥

अथ भविष्य सुरति गोपना—

कविता—आज तैं न जैहों जल लैन कौं कलिदीकूल,
ठाड़ो ही रहत लीये संग सखा सैनी कौं ।
तासौं न वसाय काय धाय मेरी वीर अरु,
रोकति है आय मम पाय मृग नैनी कौं ॥
ऐसो अम नेक नंदराय को दुलारो हरि,
नैक ना डराति कीनै भोहनतनैनी कौं ।
छोर डारै कंचुकी सु तोर डारै हारन कौं,
फोर डारै गागर बिथोर डारै वैनी कौं ॥१५॥

वर्तमान सुरत गोपना—

दोहा—सुरत प्रतक्ष दुराव जो, करि चतुराई नारि ।
वर्तमान रत गोपना, वरनत ताहि उदार ॥ १६ ॥

स०—सांभ परैं घर तैं कढ़ों, वछरान कौं लैन इहाँ लगि आई ।
आन अरचौ सजनी ये इतैं इत गोकुल गाम को लोग चवाई ॥
मैं तो डरौं अपने मन मैं, यहि धीठ भयौ जसुधा कौं कन्हाई ।
देखरी देख गहैं कुच वीर, कहै हम सौं तुम गैद चुराई ॥१७॥

अथ विदुग्धा दुविध—

दोहा—वचन क्रिया करि चातुरी, संकेतादि जनाय ।
उपपति को तिय जानियै, यह विदुग्धा भाय ॥१८॥

अथ वचन विदुग्धा—

स०—ठाड़ी हुती निज पोर छकी, छवि छैल छविले लखे निज नैनों ।
आवतु एक गली मैं अली, हसि तासौं कहाँ मधुरे इम वैनों ॥

देखियो नैक इतै सजनी, सिव पूजवे को हमैं साज बनैनो ।
फूल गुलाब के लैन हौं बाग में, काल्ह गई फिर आजहू जैनो ॥१६॥

अथ क्रया विधुग्धा—

कवित्त—सुकल पक्ष आठैं कौ आयौ है परव तहाँ,
ठाढ़ी ही कलिंदी कूल सुंदरि अन्हायकैं ।

आस पास ननद जिठानी सास वसवास,
भीर नर नारिन की भई ही अघाय कैं ॥

तहाँ हरिदेव कौं निहारि ललचोही रीठ,
सुंदरि वसीठ दीनी सैन समुभाय कैं ।

उन्नत उरोजन पै राख कैं सरोज करि,
रही नीलअंबर में आननि छिपाय कैं ॥२०॥

स०—चंदन चौकी पै चंद मुखी, मण मंदर बैठ कैं बार सम्हारत ।
आये लला हरिदेव तहाँ, मधुरी सी कछु मुख तान उचारत ॥
रूप सुधारस पीवन कौं, गुर नारिन में तिय व्योत विचारत ।
दै अगुरी कच रंधन है, नद नंदन कौ मुख चंद निहारत ॥२१॥

अथ लक्षता—

दोहा—जाकी कछु अनुमान करि, लखैं सखीजन प्रीत ।
सोचै कछु कहि आव नहि, जान लक्षता रीत ॥ २२ ॥

सो दुबिधः—एक स्नेह लक्षता, दुतियै सुरति लक्षिता ।

अथ अस्नेह लक्षता—

स०—खंजन के मद गंजन से, अलि भंजन रंजन अंजन वारे ।
मीननि पै वर जोर भये, कर सायल दीन महा निरधारे ॥
खूदसी खूब करै खिरकी, वहै पूनभरे से षरे रात नारे ।
सांची कहे किनरी इन नैननि, आज कहू नंदलाल निहारे ॥२३॥

अथ सुरत लक्षता—

स०—कोंन महावतु के कुल में, प्रगट्यौ वह धीर धुरीन नवीनो ।
लाघवता इतनी करकैं, गयौ देखत ताहि भयौ मन दीनो ॥
बूझत हों सजनी हों हा, हा किन साच कहै हुतो कोंन प्रवीनो ।
जोवन मर्रा गयंद के सीस पै, आय अरी जिन अंकुस दीनों ॥२४॥

मुदता लक्षण—

दोहा—मन भामन सौं मिलन को, व्योत परै जब जोय ।
मुदित होय मन में जु तिय, मुदिता कहियै सोय ॥२५॥

स० गंग अन्हावन कौं नरनारि, चले हैं अरोम परोस के सोऊ ।
दासी औ दास जिते हरिदेव जू, राखियै ताहि रहै नहि कोऊ ॥
साम बुलाय कहोरी दहू, घर तूरह ओर रहै ननदोऊ ।
फूल गये सुन वात यो गात, अमात न कंचुकी मैं कुच दोऊ ॥२६॥

अथ अनुसैना लक्षण—

दोहा—दूर भयौ संकेत थल, कै ह्वै ह्वै कै होत ।
अनुसैना सो जानियै, सोचै त्रिबिध उदोत ॥२७॥

वार्ता—दूर भयौ संकेत जो नायक गयौ हों न गई सो भूत अ-
नुसैना । अरु जो बिचारै कैं आगे संकेत न बनैगो सो भविष्यत
अनुसैना अरु जो साक्षात् संकेत अस्थल कौं मिटौ देखि सोच
करै सो वर्तमान अनुसैना ।

अथ भूतअनुसैना—

स०—जोवन रूप अनूप भरी रस रंग भरी हौ खरी सखियान मैं ।
प्राण पियारे कौ प्राणन के सम, त्रासत सास कभू लखियान मैं ॥
एँपन आज सुजान कहा यह वान निहारि भयो भखियान मैं ।
नीरज पान लखैं वलवीर के, वीर क्यों नीर भरो अखियान मैं ॥

अथ भविष्यत अनुसैना—
 स०-चाले के चारु सिंगार सजे, अनभाय कै अंग भुवाय कै पायनु ।
 सोच बढ़ौ तिय के तन में, तके मीत मिलाप के दायनु घायनु ॥
 जानकैं जीकी सुजान जवै, समुभाय कहौ ससुरार की नायनु ।
 गोने के जात भई दुचती, सुचती कब होहिगी मेरी गुसायनु ॥२६॥

वर्तमान अनुसैना—
 स०-प्रीष्म घोस दबाग सी दाह, दिसा विदिसान रही सरसाय कै ।
 सूख गये सरिता सर ताल, तमाल विहाल भये हैं बनाय कै ॥
 देखी निकुंज जवै उजरी, गुजरी गुजरी के हिये पर आय कै ।
 सौन जुहीन के जूथ जरे, लख सौन जुही सी रही मुरभाय कै ॥३०॥

इति श्रीराधिकारमण पदारविद मकरंद पानानंदित अलिंद श्री-
 रतीराम आत्मज कवि हरिदेव विरचितायां रसचन्द्रिकायां कर्म-
 भेद नायकानामद्वेपरकिया वरनने नाम दुतियो प्रभा ॥



दोहा—रस मैं विरस न वरनियैं कहैं रसिक सिरमोर ।
 तातें तरुनी तीसरी, नहिं वरनों यह ठौर ॥१॥
 सुकिया परकीया दोऊ, तीन भांति की जान ।
 अब तिन कों वरनन करौं, सुनियौं रसिक सुजान ॥२॥
 अन्य सुरत दुखता बहुर, नारि गर्वता जान ।
 मानवती मिलती नये, हैं ग्रंथन परमान ॥३॥

अथान्य सुरति दुष्यता लक्षण—

रोला—जासौं सुरत करी निज नायक, ताहि देखि दुख पावै ।
 अन्य सुरत दुखता ता तोय कों, कवि हरिदेव बतावै ॥४॥

स०-सोन जुहीन के जूथन कों तज, चंपलता वन में चित दीनो ।
 मोलसरी मडराय फिरयौ, फिर मालती को पररंभन कीनो ॥
 सो अब हाथ लगाये भलैं, हरिदेव की सों कस वंधन दीनो ।
 या मतमंद अलिंद कों री, अब तैं अरविंद बधू भल कीनो ॥५॥
 छंद पयोनिधे कुंडली—

तोय पठाई लैन सुध, हों अपने पिय पास ।
 तू आई वन सघन तैं, दौरी लेत उसास ॥
 दौरी लेत उसास, वदन तैं श्रम कन भलकै ।
 फटी कंचुकी चारु, कुचन कंटक छद बलकै ॥
 देख बिकल तव अंग, बलि होत विकलई मोय ।
 घरी न जो फिर पायतु, अरी पठाई तोय ॥६॥

अथ गर्वता में प्रथम योवन गर्वता—

स०-कोमलता भई पायन में, अरु जंघ नितंब सुभाय से छोड़े ।
 जानी न जात विलात सीये, कट देख चढ्यौ चित सोच के छोड़े ॥
 हाय दर्ई धौं भई गत को, नये भूवर भार उरोजन ओड़े ।
 आनन पैं चढी ओप अचानक, काननि कों कढ़े नैन निगोड़े ॥७॥

अथ रूपगर्वता—

स०-तूतौ कहै चलरी चल न्हान कों, वीर बहाँ जमुना के किनारैं ।
 दूवरहै हम कों तो भट्ट, कढ़ भौन के कौन तैं देखन द्वारैं ॥
 घेरत आय चहुँ दिसतैं, लखि पावत नैंक जौं जे बज मारै ।
 कासों कहूँ सजनी दुख सों, नित भोर परे रहैं वैर हमारे ॥८॥

अथ गुणगर्वता—

स०-जंत्र जडीन पढो किन कोरन, होय न जो अन होहिनी है ।
 मंत्र न साध असाध मरो, सब तंत्रन की गति टोहिनी है ॥
 नीके निहार कहौं निज नैन, एक इही मति सोहनी है ।
 प्रीतम के मन मोहवे कों, गुन आपनों ही बड़ी मोहनी है ॥९॥

अथ सील गर्वता—

स०-सास उदास भई न कभू, अरु नंद जिठानी नहीं तैं विसारी ।
जूथ सखी जन के यो कहै, तुम ही हमरे जिय की हौं जिवारी ॥
और हितू हित मानै रहै, पै एक ही मोहि अचंभौ महारी ।
प्यारो तो प्यारी कहै सो कहै, पै सौ तहू मो सौ कहै नित प्यारी

अथ प्रेम गर्वता—

स०-वान परी हरिदेव सुजान की, जान तजो मृदु दाषरु ऊषै ।
हूँ कै स्वतंत्र निरंतर सौं, नित पीवत मो मुख चंद पियूषै ॥
मो अधरान लगे रद के छद, सो सजनी निस वासर दूषै ।
जानी न जात कछू पर क्यौ, मुख सोतन के खिन ही खिन सूषै

अथ कुलगर्वता—

स०-ऐसी न कोऊ मिली ब्रज में, तव आइ गई हिय मांहि उदासी
छोड़ि गयो हमें याही ते ऊधौ जू, डाल गले में सनेह की फांसी
सो अब आय मिली है अचानक, तीनहु लोकन की सुखरासी ।
खूवरी सूरति की वह कूवरी, देह की दूवरी जात की दासी ॥१॥

अथ वैभव गर्भता—

छप्पय—वैनी नैन कपोल, अधर दसनावल जानहु ।
पन्नग पंरुज मुकर, विव दाड़म उर आनहु ॥
विसकसजल आति अमल, पक्क तरवर पर सोहतु ।
कालो दिवस मनोज, अरुन मुकलत मन मोहतु ॥
तच्छक समैं प्रभात के, मंजु मृदुल अरु कांत जुत ।
नागारि नवल निकुंज में, चलियै श्रीहरिदेव नित ॥१३॥

अथ भूषण गर्वता—

स०-लैन कौं दान दहो को यहाँ, तुम दानी अनोखे भये कब सूजहो ।
धोखै कहूँ वृज नारन के, अब गवारइतै हम सौं न उरुभहो ॥

दूद है हार हिये न सौं तो, हरिदेव भलैं अपने मन बूझ हो ।
बेच हो नंद की धैनु जिती, मण एकहु को लला मोल न पूज हो ॥

अथ मनिनी—

सवैया—

मानरी मान कहो सजनी न, कोरी रजनी लखि मान कूं दै करि ।
प्रीतम नैन चकोर न केवर, कोरन वे अभिलाष सुदैकरि ॥
हा हा हितू हरिदेव की सौं, मुख सोतन के अरविदु सुदैकरि ।
आनद कंद अमंद महा यह, आपनो आननि इंदु उदैकरि ॥१५॥

इति श्रीराधिका—रमन पदाविद मकरंद पानानंदित अलिंद
रतीराम आत्मज कवि हरिदेव—विरचितायां 'रसचन्द्रिकायां'
सामन्य नायका वरनने नाम त्रितियो प्रभा ॥



दोहा—बरनी सुकिया परकिया, रस सिंगार की रीत ।
अब बरनों वसुनायका, कालभेद कर मीत ॥१॥

अथ नाम भेद—

दोहा—स्वाधिन-पतिका नारि पुन, वासकसिज्जा जोय ।
फेर सुउक्ता नायका, बहुरि खंडिता होय ॥२॥
कलहंतरिता नारि पुन, अभि सरता अभिसार ।
मिलै न कांत सहेटथल, विप्र लब्ध सो नारि ॥३॥
जाको पिय परदेस मैं, जान विरहनी सोय ।
प्रोषत-पतिका नायका, ताहि कहैं कवि लोय ॥४॥

अथ स्वाधीन-पति का लक्षण—

दोहा—जाके जोवन रूप गुन, नायक होय आधीन ।
स्वाधिन पति नायका, तासौं कहैं प्रवीन ॥५॥

अथ मुग्धा स्वाधीन पतिका—

स०-दीन कीये हरिदेव के प्रान, सुजान विलोक कै सूधे सुभायनु ।
मोतन के गर गेरी गरूर, भरे गुन जीवन रूप के चायनु ॥
या बृज मै ब्रत की बनितान मै, कौन सी जो मन तोय सराहनु
ता पर और सिगार सिगार, करयौ कहा चाहत है ठकुरायनु ॥६॥

अथ मध्या स्वाधीन पतिका—

स०-वीरी बनाय दई सो दई हम हू नै लई चित चौगने चायनु ।
बैनी गुही वर फूलन सौं, चुन चुनरी चारु उढाई सुभायनु ॥
चंदन चारु उरोजन सौं, मल कैसर षोर करी सुषदायनु ।
मानयै एक इती विनती, पिय जावक रंग भरोजिन पायनु ॥७॥

अथ प्रौढा स्वाधीन पतिका—

स०-तारका तू बृजलोचन की, चिर होह सदां तुव हाथ को चूरो ।
प्रीतम के अनुराग की मूरति, राजत भाग सुहाग को जूरो ॥
देख परै हरिदेव की सौं, यह तेरो भट्ट अधरामृत रूरो ।
बंधु सो बंधु के जीमन को, पर पीमन को भयो बंधन पूरो ॥८॥

अथ परकीया स्वाधीन पतिका—

गुरु लोग कलंक लगायो चहै, सिर नैकहू नीचे तैं उँचो ज्यौ कीजै ।
चांच दहायनु में बसवौ, इन सोचन देह खिनौखिन छीजै ॥
हा हा हितू हरिदेव हमारी, इती विनती चित दै सुन लीजै ।
घात परैं मिल जैयै कितै, पर लाल इतै नित ऐवौ न कीजै ॥९॥
जै है न रावरी वान सुजान, तो कान्ह कहाँ लगि को समुझै है ।
जै है भवान सौं पायु भवावन, कै फिर कुंज को आवनु जै है ॥
जै है चवाव अवै चल यों, कोऊ नैकहू दीठ दुरै लख जै है ।
जै है न रावरो लाल कछू, पर हाल कलंक हमें लग जै है ॥१०॥

इति स्वाधीनपतिका ॥

अथ वासकासेजा लक्षन—

दोहा—सजै सेज भूषन बसन, पिय आवन जिय जान ।
वासिकसेजा नायका, जानहु जाय सुजान ॥११॥

अथ मुग्धा वासिकसेजा—

कवित्त-जावक लगाय चारु चोली सौं सुगंध लाय,
भागभरे भाल वैदी वंदन दीजियो ।
हा हा हरिदेव की सौं अंगनु सम्हार नोकै,
वीनती हमारी एक एती कान कीजियो ।
आज परजंक पै मयंक मुखी प्रीतम कौ,
है कर निसंक भले अंक भरि लीजियो ।
प्यारी मुख चंद को पिवाय कै पियूष पी कौं,
पी के मुख चंद को पियूष नैक पीजियो ॥

अथ मध्या वासिक सेजा—

कवित्त-हीरन के होद पूरे अतर उसीरन सौं,
चंदन चहल चारु चोक नु जडावके ।
खासी खसवोयनु के खूटत खजाने खूब,
छूटति फूहारे भारे केसर के आवके ॥
आई हौं विलोक हौं तो हाल ही कलिंदी कूल,
पौन अनकूल वहै प्यारी के सुभाव के ।
चंदन पलंग अरविंदन की सेज आज,
सुंदर सम्हार बैठी मंदिर गुलाब के ॥१३॥

अथ प्रौढा वासिकसेजा—

कवित्त-राधिका कुमारी सुकुमारी गुन रूपभारी,
आननि उज्यारी ओप चन्द्रिका निकारी सी ।

आगम बिहारी को जानकैं सम्हारी सेज,
 सुकमा विलोक मैंन कामिनी विसारीसी ॥
 सौंधै तरु कंचुकी सुगंधन समोये केस,
 सुंदर सुवेस वेस उषा मान न्यारी सी ।
 हीरन के हार चारु चीर जरी तारनिके,
 कीनी मणि दीपनतैं दीपत दिवारी सी ॥१४॥

अथ परकीया बासिक सेजा—

कवित्त-आगम सुजान प्रान प्रीतम को जानो जब,
 मिसही मिस पायल मजीर छोर लीने हैं ।
 साहस कै सुंदर सुवाय गुर नारिन कौ,
 फूलन के रुच सौं सिंगार तन कीने हैं ॥
 तैसे हरिदेव चारु चंदन पलंग पर,
 रचे मषतूल के विछावने नवीने हैं ।
 वंद करि द्वारन कौं मंद कर दीपन को,
 मंदर की खरकी कर्मिंद डार दीने है ॥१५॥

अथ उक्ता लक्षण—

दोहा—आवन की करि अवधि पिय, आवै नहिं तहि धाम ।
 सोचै हेत आनागमन, सो है उक्ता वाम ॥
 स०-सासन आपकी पाय अवास तै लै कर हौं वन कुंज सिवारी ।
 सोवन कुंजभरी दुख पुंजन, जातहि दृष्टि परे न बिहारी ॥
 व्याकुल वाल परी वन भूम में, जौ न आवै चलहौ वनवारी ।
 आन करै कहू प्रान तजैगी, बहुभानु उदै वृषभानु दुलारी ॥१७॥

अथ मध्याह्नकता—

सवैया—

आवन की बड़ औध गये, अब तापर ये जुग जाय बिहाने ।
 हाय कहू वन वीरनि में, इन कुंज गतीन के पंथ भुलाने ॥

कै कहूँ संग सखा गन मैं, हरि खेलत खेलन मैं सरसाने ।
 कै कोऊ मोतै अनूप मिली, रमणी रहै ताही के रूप लुभाने ॥१८॥
 अथ प्रोढ़ाषंडिता—

कवित्त-कैधों काहू कामिनी नैं कान्हर कों कीनौ वस,
 कैधों कहूँ कोऊ कछू कोतिक रमायो है ।
 कैधों सखा मंडल मैं खेलत रहेरी हरि,
 कैधों इन कुंजन को मारग न पायो है ॥
 जानियै न जात मोहि बात कछू आलि अब,
 बूझत हौं तोहरी अनंग तन तायो है ।
 काहू भरमायौ कै न पायो उन सोध मेरौ,
 सांची कह वीर बलवीर क्यों न आयो है ॥

अथ परकियाउक्ता—

कवित्त-पौन सरसान लागे मैंन सरसान लागे,
 नैन बरसान लागे वारि बुंद भड़नै ।
 म्हकन सुगंध लागे ल्हकन सुदंद लागे,
 कोस अरविंद तै अलिंद लागे कढ़नै ॥
 भूषन दुषाय लागे होन उर घाल लागे,
 आलीरी चवायनु कै चाय लागे चढ़नै ।
 प्रीतम न अंक लागे नाहक कलंक लागे,
 छिपनमयंक लागे संक लागे बढ़नै ॥२०॥

अथ खंडिता लक्षण—

दोहा—आवै प्रीतम प्रातही, सकलंकित जह धाम ।
 भुककैं देय उराहनो, जान खंडिता वाम ॥२१॥
 स०-आयेरी प्रात पिया रमणी धर, ओप अनूप हियै रपटानी ।
 अंजन रेख निहारिकैं ओठन, यौं जुग बैन कहे भपटानी ॥

कारियै वेग मया कर मोहन, मो मन संक महा दपटानी ।
रावरे आनन इंदु के ऊपर, आन फनंद बधू लपटानी ॥२२॥

अथ मध्याखंडिता—

सवैया—

आए हौ प्रात पिया छवि सौं, छकि छापबनो छगुनी के अगोंडी ।
भीन भगा नख रेख विराजित, मालगडी मुकतान की ओडी ॥
होत दुराय किये तैं कहा, हरिदेव जू प्रीत की रीत ही भौडी ।
डोडी वजाय कहै गुन रावरे, रावरेकी इह दीठ कनोडी ॥२३॥

सवैया—आये हो प्रात मयाकर मोहन, सोहन भाग जगे है हमारे ।
भाल दिषै नष चंद कला, द्विग पावक पुंज किये रतनारे ॥
बैनी गडी भुजगेस के भूषन, मो मन सोच टरै न ये टारे ।
कानन सौ हरिदेव सुने, पर नैननि सौं हरिदेव निहारे ॥२४॥

प्रौढा षंडिता—

कविता—आये हौ प्रात, बात कहित तुतरात जात,
गात श्रम सीकर सुहात सुख कारियै ।
बिना गुनमाल लाल जावक रसाल भाल,
कलित कपोल पीक लीक रति वारियै ॥
देत रेख अंजन की ओठन असेष छवि,
हा हा हरिदेव नैक आरसी निहारियै ।
नैननि की ओप सो अनूप अरिर्विदन की,
आनन गुर्विद के पैं कोटि इंदु वारियै ॥२५॥

अथ परिकीया खंडिता—

सवैया—

दोष लला अब दीजियै कौन कौं, देखत हों सब अपनी भूली ।
वैर कीयौ सगरे वृजगाम सौं, सीख सखी जनहून की हूली ॥

रावरे नेह निवाहवे की, इक चाह रही चित मैं नित भूली ।
सो तुम आवतु प्रात भयै, पीय नैननि मैं रहै साँझसी फूली ॥२६॥

अथ कलहंतरता लक्षन—

दोहा—पहलै पिय सौं मान करि, फिर पाछैं पछिताप ।
कलहंतरता नायका, ताहि कहें कविराय ॥२७॥

अथ भुग्धा कलहंतरता लक्षन—

कवित्त—लाल तो मनाई तोय चायन सौं पाय पर,
ताहू पर भई तूतौराती रिसहाई है ।
हाहा खाय कछों नैक देख प्रान प्यारी इतै,
वैठी दै पीठ फेर सौं है हू न चाही है ॥
हारी ही सिखाय कै सहेली हरिदेव की सौं,
आपने गरूर भरी मन में न लाई है ।
पहलै करि मान पीछै पछितान ऐसी,
ऐरी ये वान तोय कीनै धौ सिखाई है ॥२८॥

अथ मध्या कलहंतरता—

सवैया—

आयेरी मोय मनावन मोहन, मैं चरन सौं उन सौंह न हेरो ।
भोय लई मति मेरी बिरंचनै, तू अब कामइ तो करि मेरो ॥
हा हा हितू हरिदेव की सौं, जन्मावधि लौं गुन मानि हौं तेरो ।
लावरी बेग बुलै घनश्याम कौं, एँपन नाम न लोजियो मेरो ॥२९॥

अथ प्रौढा कलहंतरता—

सवैया—

प्यारो मनाय रहो गहि पाय, सुचायन सौं बच कोमल भाखो ।
बैन कहे हस मैंन कछू, इन नैनन हू रस नैक न राखो ॥

भोय गयी मद बीच गुमान के, जीवन को फल जीव न चाखो ।
मार से नंदकुमार कौं हार कै, हायन मै हियरा पर राख्यो ॥३०॥

अथ परकीया कलहंतरता—

सवैया—

सास के त्रास सहे जाह के हित, सोतिन के उपहास घनेरे ।
ठान अठान जिठाननि के, ननदीन के बोल कुबोल करेरे ॥
और चबायन की चरचान सौं, चाय परे छतियान दरेरे ।
ता मन मोहन सौं बिन काजहि, आज करे हम त्यौर तरेरे ॥३१॥

अध अभिसारका के भेद दो—एक अभिसरता दूसरो अभिसारका ।
दोहा—आप न जाय संकेत में, जो तिय मान सकोच ।

बोल पठावै पीय कौं, अभिसरता दुख मोच ॥३२॥

सो ये भेद विशेषकर मुग्धा में बनें । कछुक मध्या हू मैं बनें
और प्रौढा मैं परकीया मैं काम प्रेम की आधिक्यता है तासों
तामैं नहीं बनें । गरवावी मुग्धा मध्याई में बनें और कामा प्रेमा
ये प्रौढा मैं भी परकीया मैं भी बनें । अरु कृष्णा, शुकला ये दोनों
भेद परकीया के हैं, सुकिया के नहीं ॥३३॥

अथ मुग्धा अभिसारता—

कवित्ता—आनन विलोकैं होत चंद हू की मंद जोत,

अंग की सुगंध सों घेरै है अलिंद जाल ।

नैननि की ओप कौन पूजै अरविंदन की

लाजति गयंदन के वृन्ददेखें मंदवाल ॥

नीठ नीठ लाई हरिदेव ताहि कुंजन लौं,

आदर सों आप नेक आगे हू कै लेउ लाल ।

आई ना अकेली लाई संग द्वै सहेली वह,

सोने की सी वेली है नवेली अलिवेली वाल ॥

अथ मध्या अभिसारिका—

कवित्ता—संग लै सहेली अभिसारिकै नवेली चली,

जात अलवेली मिलै आनंद के कंद कौं ।

कंचन से गात अरु नैन जलजात ऐसे,

जात मग आधे छिप जात देखो चंद कौं ॥

रैन अँधियारी भई संक मनभारी देख,

सखी नें उचारी धर धीरज सुछंद कौं ।

मंद मुसकाहट सौं हूँ हूँ प्रकास प्यारी,

टार पट घूँघट उघर मुख चंद कौं ॥३४॥

अथ प्रौढा अभिसारिका—

साज चली अभिसार के साजन साजन पै मुखपान चवीली ।

मंद करै हरिदेव की सौं, सुगयंदन की गति कौं गरबीली ॥

यो कच औ कुच भारन सौं, लचिकै सुकुमारि की लंक लचीली ।

आस वसों छकि आप मनो, अब छैल छकावन जात छबीली ॥३६॥

अथ परकीया अभिसारका—

साहस कै अभिसार के साजन, कोरन जोर रचे छर छंदन ।

छोर धरै सब बाजने भूषन, भाल पै विंदु दियौ घिस चंदन ॥

हीरन के हरिदेव हराकसि, गाडे की ये कुच कंचुकी वंदन ।

हाल गयी चल चंदमुखी, मग हेरत ठाड़े तहाँ नदनंदन ॥३७॥

अथ परकीया कामाभिसारका—

पावस रैन अँधारी निहारि कै, प्यारी नै गौन कियौ हिय कांपत ।

कटक की परवाह कहा, फन राजन के फन पायन चापत ॥

जात चली मग मैं हरिदेव, प्रवीनता सौं अपने अंग भापत ।

विजु छटा लखि खोलत है, पुनि देख घटा पट नील सौं ढांपति ॥

अथ कृष्णाभिसारिका—

कवित्ता—अंजन लगाय नैन खंजन मैं मंजु भांत,

ऐन मद अंगराग अंग सुखकारी मैं ।

गूँदी मखतूलके छरानछवि छाक वैनी,
 छाजत है छितलौं छबीली छबि भारी मैं ॥
 चोवा तरु कंचुकी कसी है हरिदेव तैसी,
 भूषन जड़ाऊ मणि मरकत निहारी मैं ।
 रैन अंधियारी सिर सौसनी सम्हार सारी,
 प्यारे सौं मिलन प्यारी जात वनवारी में ॥३६॥

अथ शुक्ला अभिसारका—

ओढ़ चली अतिश्वेत दुकूल, फूलन के उर हार हिलोरें ।
 चंदन चोली रंगी गहरैं, पुनि चंदन लेप कियो तन गोरें ॥
 चांदनी सी मिली चांदनी में, हरिदेव निहारी न जात है भोरें ।
 जात चली यौं अली संग की, लगि गात समीर सुगंध के डोरें ॥४०॥

अथ विप्रलब्धा लक्षन—

दोहा—मिलै न पीय संकेत में, बिकल होय हिय नारि ।
 ताहि विप्रलब्धा कहैं, कविगन बुद्ध उदार ॥४१॥

अथ मुग्धा विप्रलब्धा लक्षन—

कूल कलिंदी कदंब की कुंजन, गुंज अलिंद सुगंध के भूके ।
 लाई लिवाय सहेली तहाँ, बहु बात बनावत ही मुख सूखे ॥
 देखे न नंदकुमार जवै, सुकुमार के अंग अनंग सौं दूखे ।
 धाय परी परजंक पै मानहु, जाय परी सफरी सर सूखे ॥४२॥

अथ मध्याविप्रलब्धा—

मान कछू सजनीन के बैन, कछू पिय की चित चाह चही है ।
 बाल गई उन कुंजन में, अलि गुंज तहाँ सरसाय रही है ॥
 देखे न त्यों हरिदेव लला, ललना अंग अंग अनंग दही है ।
 वैन कहे अनखाय सखीन सौं, नैनन मांहि लजाय रही है ॥४३॥

अथ प्रोढा विप्रलब्धा—

बाल गई वन कै वन कुंजन, आनंद सिंधु हियै भरती है ।

देखे न नंदकुमार तहाँ, तन सीरी वयार लगै वरती है ॥
 दाव रही कुच यौं कर सौं, सुषमा हरिदेव हियै अरती है ।
 मानों मनोभव के भय सौं तीय, विनै सिव की करती है ॥४४॥
 कवित्त-बैनी गूँद फूलन सौं मोतिन सम्हारी मांग,

राजै चारु चंद के समीप तेज तारा से ।
 आई केलि कुंजन में नवेली लै सहेली संग,
 उमगे हैं आनंद के वारिद अपारा से ॥

देखे पर जंक पै न प्रीतम मयंक मुखी,
 तीर से समीर भये तोय तेग धारा से ।
 जमुना के कूल ते भये हैं प्रतिकूल ऐसे,
 फूलभये सूल से दुकूल भये आरा से ॥४५॥

अथ परकीया विप्रलब्धा—

साहस कै वन कुंजन मैं, नव वात गई तन काम के जागैं ।
 चैन टरे उर के तब ही, निस नाहरि नैक तहाँ अनुरागे ॥
 सूख गयौ सुकुमार कौ आनन, ज्यों सरसी रहु सीत के आगै ।
 सूल से फूल लगे वन कुंज के, आग से पुंज पराग के लागे ॥४६॥

अथ प्रोषितपतिकालक्षन—

दोहा-जाको पीय परदेस मैं, रहै कछू दिन भोय ।
 प्रोषतपतिका नायका, बिरह विकल जो होय ॥४७॥

अथ मुग्धाप्रोषितपतिका—

कवित्त-आपनै पठाई मोय आइ होय हाल उहाँ,
 देख आई नीकै कै तिहारी प्रान प्यारी पै ।
 वाके विरह विथा की ज्यौ वूझ हो कथा तो मोपै,
 लालन जथा मत सौं जात न उचारियै ॥
 नैस कस देसो एक हूं हूं हरिदेव ताय,
 नीकै चित लाय प्रान प्रीतम विचारियै ।

तिथन मैं ताकौं नित मावस ही जानी जात,
ऋतुन में एक नित पावस निहारियै ॥४८॥

अथ मध्या प्रोषित पतिका—
कवित्त-जादिना तै मोहन विदेश गयौ औध वद,
तादिना तैं गिन तैंही वीतत घरी घरी ।
भूली भूष प्पासभौन भूषन भुलाने है,
कहै न कछु काहू भौं सकोच में भरी भरी ॥
चंदन तैं चंदिनी तैं प्यारे हरिदेव विना,
सींचत गुलाब जल जात है जरी जरी ।
ज्यौं ज्यौं वन घन में बसंत सरसात त्यों त्यों,
बढति मदन घात तन मै खरीखरी ॥४९॥

अथ प्रोढाप्रोषितपतिका—
लाल कौ गौन मयो जब तैं, दरि वाल को हाल भयो इह भांती ।
ऐसी बढी बिरहाग कछु तन, ज्वाल की भाल हू कै अधिकाती ॥
चंदन नीर उसीर गुलाब के, आब सखी छिरक बहुभांती ।
सो सजनी हरिदेव की सौं, वरषा सब बीच बीच विलाती ॥५०॥
अथ परकीयाप्रोषितपतिका—
एरी हि तू हित मान कै तोय, हों बूझन आई बुरौ जिन मानै ।
प्यारे कौ नैक त्रियोग नहीं, अरु रोग न वैद कोऊ अनुमानै ॥
ऐपन श्री हरिदेव की सौं, खिन ही खिन जात है गात सुवानं ।
व्याध कहा है कहै किनरी, सखी जानत मैं न वो नंद को जानै ॥
एक तो प्रोषित भर्तिका एक आगमपतिका ।

दोहा—चलन हार परदेस कौं, जाको पिय जब होय ।
प्रोषित पतिका नायका, ताहि कहैं कवि लोय ॥५२॥
वैठी ही चंद मुखी सजननि मैं, आई री एक तहाँ इक वाल सी ।
कंस नैं दूत पठायो कही, अक्रूर है नाम ओ चाल उतालसी ॥

जै है प्रभात लिवाय हरै, इम आय परी धुन काननि काल सी ।
नींद औ भूख तजी तब तैं, तन सूख गई तीय चंपक माल सी ॥५३॥
दोहा—आयो जान विदेश तैं, जो तिय अपनो नाहि ।

आगम पतिका के हियै, मिलबे को उत्साह ॥५४॥
औधविते घर आयेरी लाल, तऊ विध ओर इतो दुख दीयौ ।
भौन प्रवेस कौ दूजी घड़ी, भल जोत सी जोतस को मत तीयो ॥
देखिरी बेग दें जाय वहाँ, हरिदेव विना छिन जात न जीयो ।
बीती घड़ीन कै फूटी घड़याल, कै घड़याली हलाहल पोयो ॥५५॥
या रीत सौं और हूं जानियै—

इति श्रीराधिकारमण पदार्विद मकरंद अलिंद पानानन्दित
श्रीरतीराम आत्मज कवि हरिदेव विरचितायां रसविन्दकायां
अष्टनायकावर्णनो नाम चतुर्थ प्रभाः ॥



दोहा—काल भेद करि नायका, वरनी आठ सुजान ।
वरनू भेद सुभाव क्रत, तीन महा रसखान ॥१॥
१ उत्तमा २ मध्यमा ३ अधमा ।

अथ उत्तमा लक्षण—

दोहा—लखि पीय को अपराध हू, धरै न तीय उर मान ।
अनहितहू सौं हित करै, ताहि उत्तमा जान ॥२॥
भय बिन प्रीत न होत कहूँ, सब लोकन मैं इह बात प्रमाने ।
भै नहीं होत है दंड विना, पुन दंड दियै हित की चित हानै ॥
का समझावती हौ सजनी, इतनी हमहू अपने मन जानै ।
कीजिये मान री कान्ह सुजानि सौं, ज्यौं बलि मान किये मन मानै ॥

अथ मध्यमा लक्षण—

दोहा—अनहित सौं अनहित करै, पुनि हित सौं हित ठान ।
ताहि मध्यमा नायका, वरनति सकल सुजान ॥४॥

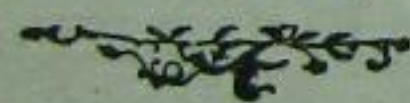
प्रीतम नैक परोसन सौ, जुग वैन कछूक कहे रससाने ।
देखत भोहै कमान चढायकै, कान लौ वान विलोचन ताने ॥
त्यों सजनी कर जोर हरे, हरि सौ है करी मन में अकुलाने ।
प्यारी कहो तब यौ मुसकाय कै, जाहु जु जाहु लला हम जाने ॥५॥

अथ अधमा लक्षण—

दोहा—विन अपराध रिसाय तिय, पिय सौ बार बार ।
ताकौ अधमा नायका, वरनति कवि निरधार ॥६॥

कवित्त—तेरे रस लीन नित तेरे ही अधीन मन,
तेरे रूप पानप को मीन अवगाहैरी ।
तेरे गुन ग्रामन गुनत गरवीलौ छैल ,
तो कौ तज तरुनी तिलोतमा न चाहैरी ।
लोचन चकोर ब्रज चंद के रहे हैं करि,
तेरे मुख चंद के उदोत को उमाहैरी ॥
खात खात सौहैं हरि भये है लज्जौ हैं कहा,
बैठी तान भौहैं नैक सो है क्यों न चाहैरी ॥६॥

इति श्रीराधिकारमण-पदार्विदमकरंद—पानानंदित अलिंद
श्रीरतीराम आत्मज कवि हरिदेव विरचितायां रसचन्द्रिकायां
सुभाव भेद वरनन नाम पंचम प्रभा ॥



दोहा—बरने भेद सुभाव कृत, तीन महा सुखदान ।
जात भेद कर नायका, वरनू चार सुजान ॥१॥
प्रथम पदमनी चित्रनी, सकल सुखन को मूल ।
बहुरि शंखनी हस्तनी, उपजावत तन सूल ॥२॥
लीला नित्य किसोर में, पद्मिन्यादिक जोय ।
प्राकृत नारिन के बिषे, शंखन्यादिक होय ॥३॥

तासों वरनों पद्मनी, बहुरि चित्रनी नारि ।

तिन सौ मिल विहरत सदा, मोहन कृष्ण मुरारि ॥४॥

अथ पद्मनी लक्षण—

दोहा—सहज सुगंध सरूप शुभ, पुन्य प्रेम सुख दान ।

निद्रा भोजन मानि, रिस, तनक तनक उर आन ॥५॥

सलज, सुबुद्ध, उदार, मृदु, हास्य अंग सुकुमार ।

अमल, अलोम, अनंगभू, स्वेत वसन रुच चारु ॥६॥

कवित्त—देखि गति मंद कौ गयंद सिर छार डारै,
लंक पैषे केहरी हिये में धरसतु हैं ।

उन्नत उरोज लखि लाजत सुमेर मृग,
दीरघ द्विगन कौ विलोक तरसत हैं ॥

कवि हरिदेव देखें आनन अमल इंदु,
धाय धाय चाय सौ चकोर सरसतु हैं ।

नागर नवेली नैक हँस बतरात तो पै,
जाने जात मानो पारजात वरसतु हैं ॥७॥

अथ चित्रनी लक्षण—

दोहा—सूक्ष्म रोम अनंग भू, रति जल गंधित होय ।

नृत्य गीत कविता रुचिर, जानत है तिय जोय ॥८॥

कला जो षोडस केल की, कोक काव्य अनुसार ।

पहरति चीर बिचित्र सो, जान चित्रनी नारि ॥९॥

भाग जगै पीहुमी के छुवै, पद कोमल कंज लगै किम तातें ।

रूप की राशि अनूप रची विध, ओप सची को लजात है मातें ॥

है रति में रत सो हरिदेव जू, जानत काम कलान की घातें ।

जान बड़ी है बड़े कुल की, बहु नैन बड़े हैं बड़ी बड़ी बातें ॥१०॥

अथ नायका को गनना—

दोहा—इक सुकिया द्वै परकीया, सामान्या मिल चार ।

अष्ट नायका मिल सुई, बरिस होत बिचार ॥११॥

उत्तमादि सौ मिल वहै, पुन लयानवें होत ।
अरु, चौरासी तीन सौ, पदमनिआदि उदोत ॥१२॥
ग्यारह सै वामन बहुरि, दिव्यादिक के संग ।
ये गनना मै नायका, बरनी बुद्ध अभंग ॥१३॥

इति श्रीराधिकारमण पदाविंद मकरंद पानानंदित अलिंद
श्रीरतीराम आत्मज कवि हरिदेवविरचितायां रसचन्द्रिकायां जाति
भेद नायका वरनन नाम षष्ठम प्रभा ।

दोहा—यह बिध बरनी नायका, अपनी मति अनुकूल ।
अब नायक वरनन कहूँ, सुधी मिटावो भूल ॥१॥

अथ नायक लक्षण—

दोहा—उपजै जाहि विलोक कें, नवल नारि उर प्रीत ।
ताहे को नायक कहैं, लखि ग्रंथन की रीत ॥२॥
रूप शील धन धर्म रत, गुननिधान मत धीर ।
अभिमानी त्यागी तरुन, महावली रन वीर ॥३॥
पोत पटी लकुटी वनमाल, सिखंड शिखा सुखधाम सुधारे ।
खंजन से मन रंजन नैन, है ऐननि के मद भंजन वारे ॥
पूरन काम कला हरिदेव, पै कोटिन काम कलानिध वारे ।
देखेरी आवत जो वन तैं, फिर मो मन तैं न टरें छिन टारे ॥४॥

सो नायक त्रिविध—

दोहा—सुकिया पति सों पति वहें, परकीया उपपति ।
वैसक नायक की सदा गनका ही सौरत ॥५॥

अथ पति को उदाहरण—

कवित्त-गोनो भयो जादिन तैं सौनो सो सम्हारै तोय,
तेरे मुख चंद कौं अमंद सुधा चारव्यो है ।
तादिन तैं ऊख औ मयूख की न भूख रही,
मधुर पियूष है उठाय दूर राख्यो है ।

रति को रमा को ओ तिलोत्तमा को मान तुम,
तेरे पति तेरो ही रूप अवलाख्यो है ।
अनंद को कंद वीर नंद जसुधा को नंद,
गोकुल को चंद तैं चकोर कर राख्यो है ॥६॥

सो पति के भेद चार—

दोहा—इक तिय रति अनुकूल है, बहुतिय सम हित दक्ष ।
सठ कपटी मिठ बोलनौं, धृष्ट सु धीठ प्रतक्ष ॥७॥

अथ अनुकूल—

स०-गोनो भयो सखी जादिन ते, ब्रज बालनि के तन सूल सेसूले ।
तो मुख चार सुधानिकौ, हरिदेव निहार रहै नित फूले ॥
और के कोटि कटाक्ष अली, इक तेरी विलोकन कौं लखि भूले
तोसी न गोकुल में कुल की, जेहि गोकुलनाथ कीये अनुकूले ॥८॥

अथ दक्षिण—

कवित्त-जमुना के तीर पै बजाई बलवीर वैन,
ऐन मैने मोहनी के मंत्र से उचारे हैं ।
धाई बृज गोपी रति रंग रस ओपी तन,
अचल विचल पट भूषन सम्हारे हैं ।
त्यो ही हरिदेव रचौ रास रासमंडल में,
सोलहै सहस्र गोपी तन मोहन निहारे हैं ।
सब सों समान रस राखिवे कौं रसिक राय,
जेती ब्रज बाल आप ते ते रूप धारे हैं ॥९॥

अठ सठ को उदाहरण—

स०-आये इहाँ मन भूले कहाँ, अरु काके भये रस के लपटी हो ।
भीतर और कछू मुख और है, कापै पड़े इह कौन पटी हो ॥
जोरत दीठन तोरत हो, हित मोरत नैन करो भपटी हो ।
चोरत हो चित औरन के, न डरो मन मांहि बड़े कपटी हो ॥१०॥

अथ धृष्ट—

स०-आवत है सकलंक तहीं, नित भूलत है सुख सोह कीये की ।
तापै कहै हंस प्यारी हा हा, अब कै छिन हूजियै मालाहिये की ॥
तासौ बसाय कहा सजनी, सुन जाकी परी इह वान वीये की ॥
गार दीये की कछू मन संक न, लाज कछू पुनि मारि दीये की ॥

अथ उपपत्ति—

संग सखीन के इंदु मुखी, जमुना जल में करै वीर विहारन ।
आय गये हरिदेव तहाँ, रसिकाई मनोहर मोद सो धारन ॥
देख रुमावल ऐसै कहौ, उर सौ लपटी फनी देउ विडारन ।
यों सुन कें कर दोउन सौ, तिय चोंकी चकी भिभकी लगी भारन ॥

अथ अनुराग लक्षण—

दोहा—देखें तैं कै सुनै तैं, चित कौ लागै लाग ।

दंपत तन तासौ कहै, कविजन सब अनुराग ॥१३॥
आई सखी तव तैं कहि तू, घनस्याम सुजान की मूरत तैसी ।
ताछिन तैं उनईसी रहै, द्विग दीहन माझ घटा घन कैसी ॥
चेत न चैन लहै छिन एकहू, वैन कहै नरहै ठिबैसी ।
ऐसी भई सुन तेई दिसा, अब जान यै देखैते होयगी कैसी ॥१४॥
दोहा—देखन दरसन सौ कहैं, सो है तीन प्रकार ।

चित्र सुपन साक्षात कहि, कबनु कीयौ निरधार ॥१५॥

अथ चित्रदर्शन—

सुंदरि सावरे अंगन की, छवि देख अनंग अनेकन बार ।
तीर से तीक्ष्ण नैन महा, हैं हिये वनितानि के भेदन हारे ॥
मोहनी मंत्र बसै मुसकान में, चोरत चित्त सो चित्त हहारे ।
काननि जैसे सुने हे विचित्र, ते चित्र में वेई चरित्र निहारे ॥१६॥

अथ स्वप्नदर्शन—

आज सखी सुपने में अचानक, आयोरी नंद लला मम अँन कौ ।

ओचक ही अचराय उवार, भयौ हिय हार महा दुख दैन कौ ॥
मैं झुक छूट चली तहि अंक तें, बोलत सो हंस कें मृदु वैन कौ ।
ताई समय गई खूट अचानक, ये अखियाँ दुखियाँ दुख दैन कौ ॥

अथ साक्षात दर्शन—

कविता-आज हौं गई ही वीर नीर भरवे के हेत,
कहा कहौ तोसों बात भानुजा के तट की ।
गागर को भरवो भयौ घूँघट उघरवौ त्योंही,
दीठ परी भाँकी वो अदा की नंद नट की ॥
ता छिन ते एरी ये भई है गति मेरी वीर,
वावरी सी होय वन वीथन में भट की ।
काननि में बसी आन तान मधुरी सी वही,
नैनन में छाई फहरान पीत पट की ॥१७॥

वैसक नायक की प्रीति गनका सूं होय है, सो रसाभास जानकें
कहौ नहीं ।

इति श्रीराधिका-रमण पदविंद पानानंदित अलिंद श्रीरती-
राम आत्मज कवि हरिदेव विरचितायां रसचन्द्रिकायां नायक बर-
नन नाम सप्तम प्रभा ।



दोहा—रस आलंवन में कहे, अपनी मति अनुभाय ।
अब उद्दीपन कहत हौं, सुनौ रसिक चितलाय ॥१८॥

अथ उद्दीपन लक्षण—

दोहा—जिन्हें विलोकत ही तुरत, रस उद्दीपन होत ।
उद्दीपन तासों कहें, जिनकी बुध उदोत ॥१९॥
सखी सखा दूती विपन, उपवन बाग तड़ाग ।
सुभ सुगंध अरु चंद पुन, षट रितु पुहुप पराग ॥२०॥

अथ सखी लक्षण—

दोहा—रहै सदा जो संग अरु, करै काज सब आन ।
चाहै हित ही कौ सदा, सोई सखी सुजान ॥४॥

सो सखी चार बिध—

दोहा—सखी एक हित कारनी, विंग विदग्धा एक ।
एक होय बहरंगनी, अनत रंगनी एक ॥५॥

हितकारनी यथा—

लेहु जू जोग दियौ मन मोहन, ऊयौ जू नैक इतो बच भाषो ।
बोली तवै ललता विलखी, लखि लाड़िली जू यह जोग है राषो ॥
प्रीत करी न डरी तब नैक हू, कान्ह सुनो वलि भूप को साषो ।
वावरी वोय कै पेड़ बबूर के, चाहत फेर अंगूरन चाषो ॥६॥

विंग विदग्धा यथा—

कूल कलिंदी कदंब की कुंजन, आज लखे कहूँ नंद दुलारे ।
ता छिन तैं यह चाक चढ़े से, रहे छद छंद अनेक उधारे ॥
कौन कौ कौन परेखौ करै, अपने अपने न भये बजमारे ।
डौंडी सी देत हैं सीस चढ़े, पन हा पति पातिली नैन तिहारे ॥७॥

अनत रंगनी यथा—

जंत्र जड़ी हू पढी बहु भांतन, तंत्ररु मंत्र कीयौ उपचारौ ।
है है न जाहि कछू सजनी, इम को उन कयों न कितो पचहारौ ॥
लावरी वेग इतै मन मोहनै, मान इतो बच वीर हमारौ ।
कारे डस्यौ नहीं जाहि कहूं वन, वावरी जाहि गयौ डस कारौ ॥
वह रंगनी यथा—

इंदु मुखी मुख इंदु निहारत, आई सखी इक पूछन ताको ।
आज कहा अधरा टक टोवत, भोर ही तैं उठ आरसी ताको ॥
रात किये लग कै अधरा छत, है री महा सजनी दुख ताको ।
क्यों री सखी रति मैं पति के, रद ना हरी वीर समीर महा को ॥

अथ सखी के काम कथन—

दोहा—मंडन शिक्षा दैन अरु, उपालंभ परिहास ।
सखी काज ये चार बिध बरनत बुद्ध निवास ॥१०॥

अथ मंडन—

गूदहरा गज मोतिन को, गज गोनी गुवाल गलै सखि डारो ।
देख परचौ पुषरागिन को, अवरु दुतिरंग भयो रत नारो ॥
फेर परी जब दीठ उतै, मण नीलम को हरिदेव निहारो ।
रीझ रही सजनी छवि देखत, भीज रहो रस नंद दुलारो ॥११॥

अथ सिरुया—

फूले रसाल रसाल की डालन, कूजत कोकिल या रव मंद सौ ।
सौन जुही ओ गुलावन के गन, छाजत हैं छवि गुंज अतिद सौ ॥
मानरी मान भलो न भद्र इह, औसर मैं पिय आनदकंद सौ ।
कीजै प्रकास निकुंजन कौ चल, आनन इंदु की जोन्ह अमंद सौ ॥

अथ उपालंभ—

कविता—

सुनकैं गये है तेरी तीखी तान ताछिन तैं, भये हैं अचेतजन चेत
न करत हैं । केते जंत्रवारे अरु तंत्रवारे मंत्रवारे, हारे उपचार कै
विचारन वरत हैं ॥ मैं हू यह सौच मैं परी हूँ जब ही
की वीर, बूझत हौं तोय मन धीर न धरत है । मधुर सुधा से इन
अधर अनूप न सों, जहर के लपेटे वैन कैसे निकरत हैं ॥१३॥

अथ परिहास—

प्रात उठी रतिरंग कीयै, सजनी रजनी रस मैं सरसानी ।
देखित आरसी आरस सौं, सखि आय कहीं परिहास कहानी ॥
तेरे री गोल कपोल अमोल पै, ये तिल है न सखी हम जानी ।
चुवन को थल जान करी है, मनोज विरंच नवीन निसानी ॥१४॥
(इतिसखी)

अथ सखा—

दोहा—पीठमर्द विट चेट पुनि, बहुरि विदूषक जान ।
तिनके लक्षण लक्ष सब, बरनू मति अनुमान ॥१५॥

मोचै मान तियान को, पीठमर्द है सोय ।
विट ताही सौं कहित हैं, अति चातुर जो होय ॥१६॥
आन मिलावै दुहून कौं, ताकौं चेटह जान ।
स्वांग धरै हांसी करै, ताहि विदूषक मान ॥१७॥

अथ पीठमर्द—

आई सिंगार सिंगार किते, कहू देव कुमार सो ओप अनूपर ।
फूलन के पट भूषन चारु, सुगंध सुठार उरोजन ऊपर ।
आई न एकहू सो पीय के मन, देखियै नैक चलो पग दूपर ।
कोटि सुधा बसुधा तल की, वलि वारियै तेरी रुखाई के ऊपर ॥

अथ विट—

आये घनघोर छाये मोरन के सोर तैसी,
पवन झकोर रति रंग अनुकूलियै ।
चपला की चमक ठमक छोटी बूंदन की,
झींगुर की झीनी धुन चातिक न भूलियै ॥
एरी तज मानि वच मान कै हमारो अब,
गरुवे गुमान गढ सोतन के तूलियै ।
जमुना के कूल फूले फूलन की कुंजन में,
फूल के हिंडोरे नैक प्यारी चल भूलियै ॥१६॥

अथ चेट—

काहू कह्यौ अब हाल ही आन कै, मैं सुन तोय सुनावन आयौ ।
बैठ रही नह चित कहा, अब जाइये वेग जो चाहत जायौ ॥
चौटत फूलन काल्ह वहाँ, बुढ़ रावरे भाल की लाल हिरायौ ।
आज उही उह कुंज गली की, थली में परचौ मन मोहनै पायौ ॥
अथ विदूषक—

जाय कै आप बुत्ताय दुहून कौ, लाय तहा रस मंत्र उपायौ ।
फेर गयो कढ़ बाहर कुंज तें, तो लौ वहाँ उन रंग मचायौ ॥

जाने जबै रस के बस मैं, तब ही परहास कौ स्वाग बनायौ ।
ओचक ही चल आप तहाँ, बल दाऊ कौ रूप धरै पुन आयौ ॥२१॥
दोहा—मिलवै नायक नायका, दूतपनै परवीन ।

उत्तम मध्यम अधम सौं, हैं दूती बिध तीन ॥२२॥

हरै सोच उचरै वचन, मधुर मधुर हित मान ।

ताकौं उत्तम दूतका, बरनत सुकवि महान ॥२३॥

कवित्ता—रैन दिन रावरे गनक लौं गुने है गुन,

रसना रसीली एक नाम कूजयतु है ।

दासी है तिहारी मन बच कै बिहारी बाल,

आप ये बिचारी सौं न ऐसी बूझियतु है ।

सुंदरि सनेह रस सींच सींच पाली तिनै,

हाय यों कहा धौं बिरहाग भूजियतु है ।

कीजिये परसन तौ दीजिये दरस प्यारे,

नेही हूँ कै काहे कौं अनेही हूजियतु है ॥२४॥

दोहा—दूजी मध्यम दूतिका, ताहि कहैं कविराज ।

थोरी बातें कहि कछू, करयौ चहै हितकाज ॥२५॥

अब कौतुक एक निहार कै नैननि, आई जतावन कौं हरि मैं ।

नवला तन छूवै निकस्यौ वर पौन, भयौ वडवानल की झर मैं ॥

अकुलाय गयो सर मज्जन कौं, जल जंतु को जूथ धस्यौ धर मैं ।

वह वारिज वारि समेत गये, वरछार उडान लगी सर मैं ॥२६॥

अथ अधम दूती—

दोहा—थूरी बातें हित सनी, कहै तेह जुत जोय ।

अधम दूतिका ताहै कौं, बरनत है कबिलोय ॥२७॥

तो तन देखि भई सब तीतर, लाल विनोद पगे रस रीती ।

कोकल कोक कलान प्रवीन, परे वा मनोज की कामिन जीती ॥

आई हों बाज अरी बक मैं, अरु मैंना कहै ये कौन सी रीती ।
तूती गुमान भरी नहीं मानत, मोर मनावत ही निस बीती ॥२८॥

अथ दूती काज कथन—

दोहा—अस्तुत अरु निंदा विनै, बिरह निवेदन जान ।
चार काज दूतीन के, कीने कवनु प्रमान ॥२९॥

अथ अस्तुत—

कोरन जोर सिंगार रचै, तन लाय सुगंध सुठार अतूलै ।
तोऊ रुचै न सखी पिय के चित, तो मुख की सुषमा सम तूलै ॥
चंपक कुंद असोक अनंत की, पाय बसंत लतागन फूलै ।
फूलै नही ज्यों अली अलि को, हिय देखे बिना छिन मालती फूलै ॥

अथ निंदा—

कवित्त—रूप परसान पै सम्हारे है बिरंच हृद,
मद मतवारे भरे बिस के से वेरे हैं ।
हेर हेर हनत अचूक नर नागरनि,
वागरन बीच वर ब्याध उरमेरे हैं ॥
कहा लौ बखानों मैं चलाकी चष चोटन की,
घायन लखाय कीनै घायल घनेरे हैं ।
पंच सर सर सौ विशेष अवरेखे वीर,
तीछन तरल ये कटाक्ष सर तेरे हैं ॥३१॥

अथ विनय—

सिध मैं पैठ सहे कितने दुख, हेत बिचार कियौ तप भारौ ।
भागन सौ पुनि बाहर आय, बिधाय तनै गल बंधन डारौ ॥
जाचत हेतु मैं प्रान प्रिया, बलि नैसक दीठ क्रया की निहारौ ।
रावरे ऊंचे उरोजन ऊपर, चाहतु है यह हार विहारौ ॥३२॥

कवित्त—काहे कौं करत मान सुंदरि सुजान तुव,
आनन विलोक कंज कानन विषा दूसौ ।
कंचन कुमद कांच केदली कुमाच वर,
केहर वरीरु कलि कोकिलान ना दूसौ ।
हा हा हरिदेव की सौ दीन भई सोतैं सब,
लीन भयौ प्यारौ देख तेरो रूप जादूसौ ।
कोकन कै संक औ अतंक मृग भीननि कै,
डोलत मयंक हू कलंक लै फिरादू सो ॥३३॥

अथ विरह निवेदन—

कवित्त—रावरे वियोग अलवेली वाल लालन वो,
विकल भई है पल कल न लहाती है ।
पौन भै भीनी मौन भीतर परी है वीर,
चंदन तैं चादनी तैं चंद तैं डराती है ।
कहै हरिदेव ताके उसन उसासन सों,
जरवे के डर न सहेली ढिग जाती है ।
नैन घन धार वारि वरसैं अपार तोऊ,
हाय विरहागन की मार अधिकाती है ॥३४॥

अथ स्वयं दूतिका—

दोहा—जहाँ जु अपनौ आपही, करै दूत पन नारि ।
स्वयं दूतिका ताहि को, बरनत सुकवि उदार ॥३५॥
चोटत फूल गिर्यौ मण भाल को, हेर कै हार गई सब आली ।
त्रासत सास की जाय सकैं न, लगै डर कुंज परी सब खाली ॥
आन अंध्यारी छई चहुँ ओर तैं, भूम लौ भूम रही द्रुम डाली ।
आईयै नैक मया करकैं बलि, दीजियै दूढ़ हमैं वनमाली ॥३६॥

अथ षट् ऋतु वर्णन—

दोहा—प्रीष्म पावस सरद हिम, पुनि कह सिसिर बसंत ।
ये षट् रितु बरनन करै, ये कवित्त सरसंत ॥३७॥

अथ प्रीष्म—

कावत्ता-मंदिर गुलाब के गुलाब दल सेज सज,
चंदन पलंग चारु चंदन चहू धा फैल ।
खासे खासे खस के हैं परदा दरीन दर,
अतर वगार वार बाहर जहाँ जों गैल ।
तहाँ हरिदेव रचि राखी विपरीत रति,
मदन विनोद अंग सरस्यौ सुरंग अलै ।
छैल कौं न छाड़त हैं छिन हू छवीली छकि,
छाड़ति छवीली कौं न छिन हू छवीली छैल ॥३८॥

अथ पावस—

कावत्ता-कारे कारे भारे अतितम के पहाड़ ऐसे,
पूरव दिसातैं आज आवतु डरारें हैं ।
गाजत गंभीर सुन वीर न धरत धीर,
भरत मदनीर चैचलत पनारे हैं ।
कहैं हरिदेव पान चाव चारु चायनु सौं,
मान गढ दायनु की पैज कै सिधारे हैं ।
वादरन वीर वलवीर की दुहाई यह,
मदन महीप के मतंग मतवारे हैं ॥३९॥
आयौ असाढ़ सो गाढ़ परी, दिल दाडतजी दुख कैसें भरेंगे ।
पापी कलापी चहूं दिस तैं, कलि कूज कै ही को हुलास हरेंगे ॥
त्यौं जुगनू की चमकन सौं, हरिदेव कहो किम धीर धरेंगे ।
प्रीतम प्रान पियारे बिना, जब जेब दराव दराह करेंगे ॥४०॥

अथ सरद—

कावत्ता-सरद महीपति नैं कोनौ है उछाहमन,
विश्व के विजै कौं सैन साजी एक जात की ।

फार अंधकार कौं अगर चंद जोधा चढ्यौ,
जौन्ह करवालि लैकें विरही के घात की ।
फूले फूल बान ओ वंधू कै अलि वृंद गोली,
रंजक पराग पोंन भाल वशु घात की ।
तासौं भाज वचवे कौं नीकौये उपाय एक,
बार बार वावरी बतावै तोहि चातकी ॥४१॥
तरुन तनूजा तीर सौरभ समीर तैसौं,
तैसी अलि भीर सोहै सुमन भुकट पै ।
तैसी बृज गोरी रंग वोरिन की चारों ओर,
नूपुर की भीनी दुत गत की उघट पै ।
तैसी ताल वीन की नवीन हरिदेव कहै,
परम प्रवीननि के मन की रुकट पै ।
तैसी चारु चंद की जुन्हाई सुखदाई अब,
तैसी छबि छाई है कन्हाई के मुकट पै ॥४२॥
बिछुवा मराल मन मोहैं मुनिराजन को,
अंबर अमल दिपै तास की फरद है ।
पथक उरोज थाथी बांध उठ गौन लागे,
हौन लागे सौतन के आनन जरद हैं ।
व्याकुल वियोग वडवागन तैं प्यारे जू के,
लोचन चकोरन कौं हरियै दरद है ।
आनन अमल इंदु इंदीवरनैन फूले,
कीनी विध मैं आज तोही मैं सरद है ॥४३॥
कंचन के खंभ औ दिवालें छत्त छाजे बने,
कंचन की सोभित तिवारी चित्रसारी सी ।
पन्ननि के पल्लव फवे हैं फूल नाना मण,
विद्रुम की बेल पै बनाई फुलवारी सी ।

आई है बिलोकवे कौं कीरति कुमार ताके,
अंगन की ओप तीनों लोकन की उजारी सी ।
औरन के कातिक की मावस दिवारी रहै,
नंद जू के मंदिर में दिन ही दिवारी सो ॥४४॥

अथ हिमऋतु वरनन—

कविता-भाजो है दुनी सौ औ दिसान सौं दिवाकर सौं,
दीरघ दरीन में सौं हूँ कर अकैठो है ।
वारि निधि वारि में सौं कालिंदी धार में सौं,
गंगा के कछार में सौं मार मण हैठो है ॥
कहै हरिदेव मान त्रास हिम बिक्रम कौं,
गरम गुसाईये बिचार करि अठौ है ।
अचल अभेद जीय जान प्रान प्यारी तेरे,
उन्नत उरोजन को कौट करि बैठौ है ॥४५॥

अथ सिसर ऋतु—

धायो है प्रवल प्रचंड वल दंडन के,
खंड नव मंड लीनो राज मुन दीप को ।
लूट लीनी संपत सकेलकैं सरोजन की,
भाग्यो भयभीत हूँ कै भान हरि जीप को ।
कहै हरिदेव परी संक मन कोकनिके,
लोकन अतंक वस कंप नव नीप को ।
दूढ़ति फिरै है अब एरी ये वियोगिन कौं,
सिसर समीर जोधा मदन महोप को ॥४६॥

अथ फाग—

आई उत गोरी रस बोरी होरी खेलवे कौं,
इत में गुपाल भये ठाड़े रस मस कैं ।

छाई बहु धूमन सौं धूधर गुलालन की,
भीगे नंदलाल तामैं केसर के रस कैं ।
ता समैं सुजान तैनैं आन कैं अचानक ही,
वंदन सौं मीझौ मुख चंद बर बस कैं ।
तो द्रिग गुलाल हरिदेव हस डार्यौ सो तो,
सोतिनकी आंखन में आज हूँ लौं कस कैं ॥
आई बृज गोरी रंग बोरी होरी खेलवे कौं,
ठाड़े ब्रजराज इतै संग लै सखान कौं ॥
धूमन सौं धाय धाय गाय कैं धमारन कौं,
मंद मुसिकाय गहे कान्हार सुजान कौं ।
कहै हरिदेव छूटे अमल अवीर बूके,
केसर गुलाब आब लागे सरसान कौं ।
देखि यह फाग निज लेख बड़ भाग मानो,
भू कौं अनुराग बाढौ जात आसमानकौं ॥

अथ बसंत वर्नन—

कोकिल कपोल कुल कावल सिपाह कीनैं,
किंसुक कलंगीपोन अश्व चढ़ धायौ है ।
राते राते पात ते पताका फहरात वर,
सुमन समूह सर पिंजर बनायौ है ।
मान कढ गंजन मलिद गज मत्ता छूटे,
ऐसे समै कैसैं मतमान कौं सुहायौ है ।
भूपति मनोज को चमूपति बसंत वीर,
कंत विमुषन पै चमूह सज आयौ है ॥४७॥

कवित्त-पे न रितुराज की हैं वीर वनराज वेली,
राजै भीर वीरन की जंग रंग ओप्यौ है ।

किसुक न फूले ये पलीते जगे तोपन पै,
 सुमन सुगंध ये न विजै केतु रोप्यौ है ॥
 फूले फूल वृंदन पै डोलत मलिंद ये न,
 मान गढ गंजन गयंद गन तोप्यौ है ।
 आनंद की कंद चल वेग नंदनंदन पै,

आज रति नाथ पति विमुखन पै कोप्यौ है ॥५०॥
 इति श्रीराधिकारमन चरनारविंद मकरंद पानानंदित अलिंद
 श्रीरतीराम आत्मज कवि हरिदेवविरचितायां रसचन्द्रिकायां
 उदीपनभाव बरनन नाम अष्टमो प्रभा ।



अथ अनुभाव वर्नन—

दोहा—जो रस को अनुभव करै, सौ अनुभाव बखान ।
 लीलादिक सौ होत है, ते दस भांति सुजान ॥१॥

अथ नाम—

लीला प्रथम विलास कहि, पुन विछत्ता सुवखानि ।
 विभ्रम किलकिचति ललित, मोटायत पुनि जान ॥२॥
 विव्वोक वहत पुनि कुटामित, बरनै सब कविराय ।
 प्रगट सिंगार तियानके, उपजै ये दस भाय ॥३॥

अथ लीला हाव लक्षन—

तिय पिय को पिय तिय को, रस में वदल भेष ।
 तासौ लीला हाव कहि, वरनै सुकवि अशेष ॥४॥
 है पटपीत अनूप मनौ, रंग कंचन सौ छबि सिंधु भकोरो ।
 वा मधुरी मुरली धुनि मैं, विध शुद्ध सुधारस सार निचोरो ॥
 वांकी चितौन लपै हरिदेव जू, जातन ही चित कौन कौ चोरो ।
 तीर कलिंदी कदंब तरै, हम लाल लखौ इक कान्हर गोरो ॥५॥

कटि पीतपटी फहरात मनोहर, ओ लकुटी कर चारु लियै ।
 सिर मोर पखा मुरली मुख बाजत, राजत है बनमाल हियै ॥
 हरिदेव मनोज तरंगन सौ तन चंदन चित्र विचित्र दियै ।
 जमुना तट श्री वृषभानु सुता, बहरै मन मोहन रूप कियै ॥६॥
 अथ विलास हाव लक्षन—

दोहा—चितवन, बोलन चलन मैं, अति हित की सरसान ।

चित्रा चुरावै पिय कौ, सो बिलास जिय जानि ॥७॥
 कंचन सौ तन केसर खौर, महा नक वेसर की छवि बाढी ।
 स्याम दुकूल हैं फूल के भूषन, कामिनी कोटि मनोज की दाढी ॥
 सोहत है अति ऊंचे उरोजन, कंचुकी चारु कसी अति गाढी ।
 को है सखी यह मोहत मो मन, विजु छटासी अटा पर ठाढी ॥
 कवित्त-कारे कजरारे अनयारे हैं विसारे महा,

दीरघ ढरारे आन काननि बिहारे हैं ।
 साँचे कैसे ढारे अति रूप के उजारे प्यारे,
 सेत रतिनारे रति मद मतवारे हैं ॥
 भूम भूपकारे मैं निहारे हरिदेव की सौ,
 उपमा न पाईयौ विचार कवि हारे हैं ।
 वारे सर मैंनके विलोक तव नैननि पै,
 कौन मृग मीन कंज खंजन बिचारे हैं ॥८॥

अथ विच्छित्ति हाव लक्षन—

दोहा—थोरेई सिंगार तन, सोभा बढै अपार ।
 विच्छित ताकों कहत हैं, कबि हरिदेव उदार ॥९॥
 कवित्त—चंपक लतासी कहू कैसे तन ओप देखै,
 गालब गुलाबन की आव जात धसकी ।
 चंचला चिराकन को चाहै मद चूर होत,
 चामीकर कूर होत पावै ओप मस की ।

नैक हरिदेव ज्यों हंसै तो भरै फूल मानों,
 बातन में वहै ताकै सरिता सी रस की।
 पौढे पर जंक पै मयंकमुखी लालनितो,
 सेज को पिछोरा देत जेव जर कस की ॥११॥

अथ विभ्रम हाव लक्षण—

दोहा—करै भूल रस में तहां, अचल विचल सिंगार ।
 विभ्रम तासौ कहत है, कवि हरिदेव उदार ॥१२॥

कवित्त—छांड़ि छांड़ि गेहन चली हैं गज गौनी तज,
 संक गुर लोगन की कानि कुल खोलै हैं ।
 जावक सुभाल पग अंजन लगाय कोऊ,
 हारि कटि लाय मुसिकाय मृदु बोलै हैं
 धार करि नूपुर अनूप हरिदेव की सौ,
 ऐसे ही सुजानन सिंगार सजे सोलै हैं ।
 वैन नाद मादिक अधीन ब्रज गोरी भई,
 वावरी लौ वीर बन वीथन में डोलै हैं ।

अथ किल किंचित हाव लक्षण—

संग सखीन के इंदु मुखी, जमुना जल में करै वृंद विहारन ।
 ताई समै हरदेव अचानक, आये मनोहर मोद सौ धारन ॥
 हेर रुमावल टेर कहौ, उर सौ लपटी फनी देऊ विडारन ।
 सो सुन कै करि दोऊन सौ, तिय चौकी चकीभिकि लगीभारन ॥

अथ ललितहाव लक्षण—

दोहा—बोलन चलन चितोन में सोभा अति सरसान ।
 ललित हाव ताकौ सबै, वरनति सुकवि सुजान ॥१५॥
 कवित्त—लटिक लटिक चली पहर चटकीले पट,
 उपटी अछेद आभा ससि तैं निराली सी ।

सुमन सुवासन तैं सरसी सुवास तन,
 धाये हैं अलिंद तज कंज वन ताली सी ॥
 देखी हरिदेव चल आज वन वीथनि में,
 डोलत चहूँघा रसराज की प्रनाली सी ।
 पायन की लाली छित छार्जति निराली छांव,
 नखन उजाली परैं मोतिन की जाली सी ॥१६॥

कवित्त—सुरंग दुकूल ते पतिका फहरात आगैं,
 मलय मलिंद प्यादे दोरत जुहीम है ।
 रूप परसान पै सम्हार द्विग बान लीने,
 भृकुटी कमान कीनै तरकस सुहीम है ॥
 मानस तुरंगन पै उन्नत उरोज भट,
 संग हरिदेव दल दिल के तुहीम हैं ।
 गौन गजराज दै कै नूपुर निसान आज,
 मदन महीप कीनी कापर मुंहीम है ॥१७॥

अथ मोटायत हाव लक्षण—

दोहा—पिय देखत ही जव तिया, लै अगराय जम्हाय ।
 कवि हरिदेव बखान ही, सो मोटायत हाय ॥१८॥
 वह कंचन की लतिकासी अनूपम, जात डुलावत ही बहियां ।
 सत आय कठ्यौ वह नंद को नंदन, दीठ परी तहि के पहियां ॥
 हरिदेव जू आय हरै मुसकाय कै, डारी जवै गल में बहियां ।
 थक नैन रहे तिय के ओ, लगी जक एक यही नहीया नहिया ॥१९॥

अथ विब्वोक लक्षण—

दोहा—जोवन मद सौ पीय कौ करै अनादर बाम ।
 कहै हाव विब्वोक सो, देखि प्रथं अभिराम ॥२०॥
 मागत दान फिरो वन में, भले कान्ह सुजान जू ओ लिये ओडै ।
 लाज न आवत नैक तुम्हैं हो, ग्वाल के ग्वाल कहै कहा जोडै ।

जैहैं लिवाय अबै नृप कंस पै हाथ लगाय भलैं पुनि छोड़ैं ।
आय भरो नित भावरी सी, यह सामरी सूरत कामरी ओढ़ै ॥२१॥

अथ विकृत हाव लक्षण—

दोहा—बोल सकैं नहीं लाज सौं, बचन पीय ढिंग वाल ।

ताहि कहैं हरिदेव कवि, विकृत हाव रसाल ॥२२॥
है हिय मैं टटकी वनमाल, सौं भाल पै वंदन विंद नवीनौ ।
पीत पटी फहरावत सुंदर, मोर किरीट भुक्यौ रंग भीनौ ॥
वाही कौ रूप अनूप लषै, रति के पति को मद होत है हीनौ ।
सो ब्रजराज मिल्योरी भट्ट, पर लाज निगोड़ी न देखन दीनौ ॥२३॥

अथ कुटुमित हाव लक्षण—

दोहा—जहाँ केलि मैं पीव सौं, भूठे भुकैं जु तीय ।

तहाँ कुटुमित हाव कहि, बरनै कवि कमनीय ॥२४॥

कवित्त-चांप चाप चंपावन चामीकर चूर कीनौ,

चंचला चिराकन के जात मद जीकौ है ।

अंचल के ऐचै कीनै चंचल द्विगंचल तैं,

छूवत उरोजन कौ कीनौ मुख फीकौ है ।

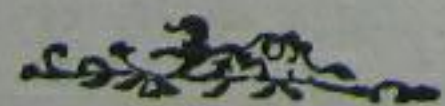
चुंवन मैं चौक चौक भाजी हरिदेव तोऊ,

नैक न सनेह घट्यौ मोहन के ही कौ है ।

हीकरन एरी यह दीह दुख सोतन कै,

सीकरन तैरौ कै वसी करन पीकौ है ॥२५॥

इति श्रीराधिकारमन पादाविंद पानानंदित अलिंद श्री रती-
राम आत्मज कविहरिदेव—विरचितायां रसचन्द्रिका यां अनु-
भाववरनने नाम नवमो प्रभा ।



अथ सात्विक भाव लिख्यते—

दोहा—संबंध रूप रत चतैं, लहियै कछु विबधान ।

भाव विबस जो चित्त है, सात्विक ताहि वषान ॥१॥

सो सात्विक के आठ प्रकार भेद—

दोहा—स्थंभ श्वेद रोमांच कहि, अरु सुरभंग वषान ।

कंप विवर्नक अश्रु कहि, प्रलय अष्ट ये मान ॥२॥

अथ स्थंभ लक्षण—

दोहा—सब सारीरिक धर्म के, होत होय गतिरोध ।

तन संग्या कंपादि बिन, सो स्थंभ प्रबोध ॥३॥

लै जमुना जल कौ नव नागर, आगर रूप महा छबि बाढ़ी ।

चाहै धरा तैं धरो सिर पै करि लै कटि तूल करी अति गाढ़ी ॥

दीठि परे हरिदेव अचानक, अंग अनंग की आग सौं दाढ़ी ।

घाट धरी न धरी गई सीम पै, रहि गई गागरि हाथ लै ठाढ़ी ॥४॥

अथ स्वेद लक्षण—

दोहा—हर्षादिक तैं होत जहि, तन प्रस्वेद कण आहि ।

स्वेद ताहि को कहत हैं, जे प्रवीन कविराय ॥५॥

आपने भौन पै प्यारी चढ़ी, सुत आपने भौन चढ़े जसुधा के ।

दीठि सौं दीठि गई मिलियों, उर सौं उमड़े जनु मेघ मुदा के ।

सोइ रहे थिर ह्वै हरिदेव कै, शोभित सार सबै बसुधा के ।

है मुख पै श्रम के कनिका, किधौ चंद के मंडल वृंद सुधाके ॥६॥

अथ रोमांच लक्षण—

दोहा—हर्षादिक तैं होत जँह, रोमन को उत्थान ।

पुलकित होय सरीर तँह, सो रोमांच बषान ॥७॥

नहाय कै नागरि संग सखीन के, ज्यों जल तैं कटि बाहर आई ।

ओढ़न चीर लगी तब ही, उत मैं नद नंदन बैन बजाई ॥

त्यों पुलिकाल बढ़ी तिय कै, तन सो उपमा हरिदेव जू गाई ।
मानौ खुले पट सिंभु के जान, फनी अति आतुर पूजन आई ॥१५॥
अथ सुरभंग लक्षण—

दोहा—हर्षादिक तैं होत जहि, गद गद गिरा सुजान ।

सुर सुभाव तैं जो, सो सुरभंग बषान ॥१६॥

तो मुख तैं सजनी सुनिकै, गुनि देखन कौ अति जो अकुलायौ ।
आज अचानक ही मग में, मिल्यौ मार सौं नंदकुमार सुहायौ ।
री मुसिकाय कै नैंक तबै, उन मोहनी मंत्र सौ बैन सुनायौ ।
चाहौ कछू कहिबौ हम हू, कहि आयौ कछू न हियौ भर आयौ ॥१७॥

अथ कंपा लक्षण—

दोहा—होत हर्ष भय आदि तैं, सब सरीर में कंप ।

ताही कौ हरिदेव कवि, कंपा सात्विक जंप ॥१८॥

आई अन्हावनु पाय लग्यौ, यहि वायु हू वैरी भयौ बजमारौ ।
री इत में उघर्यौ मुख जात, खड़ौ उत देखत नंद दुलारौ ।
आज लौ काहू लखी अगुरीनहू, हौसरहौ न नदेउ विचारौ ।
कोजै कहा अबरी सजनी, करि कंपत चीर न जात सम्हारौ ॥१९॥

अथ वैवने लक्षण—

दोहा—कछू विकार तैं होत जहि, वने और तैं और ।

ताही कौ वैवने कहि, वरनौ कवि सिरमौर ॥२०॥
बैठी हुती सजनीनिमें सुंदरि, तीनहु लोकन की छवि छाई ।
ता मग हू कहे वैन वजावतु सो सुन कै कठि बाहर आई ।
फूल सिंगार किये हरिदेव कौ, देखत ही मन में अकुलाई ।
छाय गई सियराई सवै तन, आय भई मुख पै पियराई ॥२१॥

अथ अश्रु लक्षण—

दोहा—हृष विषादादिकन तैं, प्रगटै लोचन नीर ।

सात्विक अश्रु वषान सौ, कहै सकल मतिधीर ॥२२॥

भोर ही न्हाय कै इंदु मुखी, तब हाथ सखी के फुलेल मगावा ।
वैनी गुंदावन बैठी तहाँ, कर कंज लियै नद नंदन आवा ।
देखत ही द्रिग वारि भर्यौ, हरिदेव दुहू करि सों सो दुरावा ।
मानहु सची दिवेंद्र की पाय, कीयौ अरविंद नैं ईंदु पै दावा ॥२३॥

अथ प्रलय लक्षण—

दोहा—हर्षादिक तैं होत जहि, निष्ठ चेष्टा ज्ञान ।

रहै न कछु सुध देह की, ताकौ प्रलय वषान ॥२४॥

जी है ज्यौ जी है अवै, श्रीवृषभानु कुमार ।

ना तर विष पीयै सवै, नंद महर के द्वार ॥२५॥

इति श्रीराधिकारमन पदारविंद—मकरंद—पानानंदित
अलिंद श्रीरतीराम आत्मज कवि हरिदेवविरचितायां रसचन्द्रि-
कायां सत्विकभाव वर्नने नाम दसमो प्रभा ।

—२३३—

रूप लक्षण—

दोहा—अंतर तैं उपज्यौ जु है करि सब रसन संचार ।

कै सब रस में मिल रहै, सो संचारी धार ॥२६॥

सो संचारी तेतीस विधि—

कविता-निर्वेद औ गिलानि संका औ असूया मान मद,
श्रम अरु आलस औ दैन्यता बखानियै ।

चिंता मोह स्मृति बरनत धृति लाज अरु,
चपलता हर्षरु आवेग उर आनियै ।

जड़ता अरु गरव विषाद औ सुक्य निद्रा,
अपस्सार सुप्त बोध आमर्षन जानियै ।

अवहित्था उग्रता सुमति व्याधि उनमाद,
मरन त्रास तरक ये तेतीस मानियै ॥२७॥

अथ निर्वेद लक्षण—

दोहा—तत्त्व ज्ञान अपमान तैं, आवै जिय वैराग ।
तासों नर्म गिरादि ह्वै, सो निर्वेद समान ॥३॥

चाल्यौ नहीं रथ कै पथ हौ, पथ तीरथ के चित दै नित चाल्यौ ।
चाल्यौ न वेदना सासन में, जग वेदना सासन में जिय घाल्यौ ।
घाल्यौ न दीनहू कौ किनका, किनका कन कौ मण दीन ज्यौ पाल्यौ ।
पाल्यौ न नेह कभी हरि सों, हरिषा जो वृथा विस वासर पाल्यौ ॥

अथ गिलानि लक्षण—

दोहा—रति श्रम गति तृष्णादि तैं, व्बाकुल होय शरीर ।
कंपादिक ता माहि है, सो गिलानि मतिधीर ॥५॥
तीक्ष्ण तरल कटाक्ष सर, मारे विसष कराल ।
जब तै सुध न शरीर की, परे लाल वेहाल ॥६॥

अथ संका लक्षण—

दोहा—नृप अपराधादिकन तैं, होय संक उर आन ।
कंठादिक सूखै तहाँ, संका ताहि बषान ॥७॥
उदा०—करन गहौ कर देखियै, अपने हिय अनुमान ।
गाम चवायनु सौ भरो, जान दोऊ पिय जान ॥८॥

अथ असूया लक्षण—

दोहा—पर संपत कौ देख कैं, दोष दिष्ट हिय होय ।
तब दोषारोपन करै, जान असूया सोय ॥९॥
कवित्ता—कोमल कमल कर कंजन गुहे जे हार,
तहाँ जोग मेली नाद रसना क्यौ कूजियै ।
सुंदर सनेह रस सींच सींच पाली देह,
ताकौ राख येह मन कैसे कैं अमूजियै ॥
ये तो बिरहाग में जरै हौ बृज देस अब,
तापर अदेश आग प्रगटी ये दूजियै ।

कूबड़ी कौ भोग जहाँ जोग वृजवालिन कौ,
हाय हाय ऊधौ कहा ऐसी उन्हें वृम्भियै ॥१०॥

अथ मद लक्षण—

दोहा—मद्यादिक तैं होत जहि, हिय में हर्ष उदोत ।
सिथिल चाल अलि बल बचन, कटै तहाँ मद होत ॥११॥
कवित्ता—राखे हैं डारि वीर जुलम जाल जोवन के,
जाहर जहूर है वसीया रस कूप के ।
मंद मुसकान की बिलंद हरिदेव फासी,
तीखन कटाक्ष सर वोरै विष रूप के ।
छाके प्रेम मद सौ विमद वारि नीकौ करै,
याके चाह एक मग प्रीतम अनूप के ।
काननि की ओट है कमान कसै ठाढ़े वीर,
तेरे नैन एरी ये अहेरी मैं भूप के ॥१२॥

अथ श्रम लक्षण—

दोहा—सुरतादिक बिबहार तैं, अति ही थाकत गात ।
जंभादिक ता माहि है, सो कहि श्रम अवदात ॥१३॥
प्रात उठी राति रंग किये पति, संग जगी तिय चारहू जामहि ।
देषत आरसी सौ अपने, करि पौहची बनी मुकतान की तामहि ।
ऐसे फवी छवि सौ हरिदेव जू, वैर निदारन के हित कामहि ।
बाध सतारक तारन में, अरविंद करै मनु इंदु के सामहि ॥१४॥

अथ आलस लक्षण—

दोहा—कारजादि के करन में, कायरता अति होय ।
उत्थानादि असक्ति जहि, सो आलस कवि लोय ॥१५॥
बाल उठी राति रंग किये, अंग अंग सिंगार भये अति ढीले ।
टूट रहे मुकतान के हार, सम्हार कछू न दियै छद गीले ॥

आलस सौं जमुहात खरी, अग्राति उठे कुच यौं अरवीले ।
चाहै उड़ौजन कंचन भूमि सौं, भूप मनोज के वाज रंगीले ॥१६॥
अथ दैन्यता लक्षण—

दोहा—भावतु वस्तु अलभ्य तैं, दुख कौ होत उदोत ।
निकसैं दीन गिरा जहाँ, भाव दैन्यता होत ॥१७॥

बैरी भये पशु पंछी सर्वैं, अरु फूल करै दुख मारत मार है ।
सो सहि है हम तौ सब ऊधौ जू, कहियौ कछु मति नंदकुमार है ।
पियौ दधागन कौ तौ कहा, अरु ह्वै है कहा करि ज्यौ गिरधार है ।
जारन कौ विरहाग बढ्यौ, खुबवोरन को प्रगट्यौ द्रिग वार है ॥

अथ चिंता लक्षण—

दोहा—जहाँ कौन हू बात की, चिंता हिय अधिकाय ।
चिंता तासौ कहत हैं, कवि पंडित समुदाय ॥१८॥

गौन सुनौ मन भामन कौ, मन भामनी प्राननि गौन सौं कीनौ ।
देखैं न वोलैं न सुनैं न कछु, रुख रुखो कीयो मन मोन सौं लीनौ ।
बैठ रही कर पै धर आननि, चारु बिचारन में चित दीनौ ।
देखि सनाल मनौ अरविद के, ऊपर इंदु नैं आसन कीनौ ॥२०॥

अथ मोह लक्षण—

दोहा—होत तहाँ दुष्यादि तैं, व्याकुलता चित आन ।

काज अकाज विचार नहि, ताकों मोह बषान ॥२१॥
जाति हुती इत राधिका नागरि, री उत वे मनमोहन ठाढ़े ।
दोऊन दोऊ गए लषि मोहन, नहि कछु सुधि जो सुख बाढ़े ॥
एरी जके से थके से रहें, हरिदेव सके से सबै अग जाड़े ।
मैन चितैरे मनो छवि पत्र पै, चित्र विचित्र दोऊ लिखि काढ़े ॥२२॥

अथ संमृत लक्षण—

दोहा—जहाँ अवर्ने देखि कै, वर्न याद ह्वै जाय ।
तब तासौ अस्मृत कहैं, कवि हरिदेव सुहाय ॥२३॥

जारति अंग अनंग की आग सौं, चैत की चांदनी चंद महान की ।
कोरन जोर किये उपचारन हारी विचारी सहेली सुजान की ॥
व्याकुल बालै लिवाय गई सज, सौंज सरोवर के तट न्हान की ।
दूनी दवाग बढी तियकै, तन देख दसा चकवी चकवान की ॥२४॥
अथ धृत लक्षण—

दोहा—दुख कौ सुख करि मानवौ, धीरज धरिवौ चित्त ।

तासौ ह्वै सुचितादि तन, सो धृत जानहु मित्त ॥२५॥

स०—रे मन साहसि साहस राख, सु साहस सौं हिय मोद लहैगो ।
तेरौ विचारौ न ह्वै है कछु, करि है हरि आपहि जोई चहैगो ।
है यहि एक मतौ हरिदेव कौ, देव अदेव जो कोऊ गहैगो ।
जो न रहौ थिर ह्वै सुख वो, अब त्यों दुख हूथिर ह्वै न रहेगो ॥

अथ चपलता लक्षण—

दोहा—अनुरागादिक तैं तहाँ, थिरता रहै न चित्त ।

अति आतुर ह्वै जात मन, भाव चपलता मित्त ॥२७॥

मन मोहन सौं मन लग्यौ, घर अंगना न सुहाय ।

थिर न रहै थिरकी फिरै, फिरकी लौ दिन जाय ॥२८॥

अथ हर्ष लक्षण—

दोहा—तहाँ कौन हू हेत सौं, उर उपजै आनंद ।

प्रगटे पुलक प्रश्वेद जह, हरिष कहत कविवृंद ॥२९॥

बैठी हुती सजनीन तैं सुंदरि, सोचन में सब गात सुखाने ।

बात कछु कहि जात नहीं, हिय के सब हास हुलास हिराने ॥

आये पिया हरिदेव विदेस तैं, काहू कहै वच ये रस साने ।

फूल उठे ललना के विलोचन, और सखीन के नैन सिराने ॥३०॥

अथ आवेग लक्षण—

दोहा—नेहादिक तैं होत जहि, अति संशय उर आय ।

संमृत मय विवहार सब, सो आवेग कहाय ॥३१॥

कविता-कैधौ रूप छोना के है खेल के खिलौना खूब,
 कैधौ भरे टोना करै जंत्र है दिवारी के ।
 कैधौ हरिदेव दो है मीन ससि मंडल पै,
 बिछुरे पयोध रस राज सुखकारी के ॥
 कैधौ छूट भाजे हैं कुरंग इंदु जानति सौं,
 कैधौ हैं तुरंग मैं भूप की सवारी के ।
 कैधौ तीन गुन के बनाए बिधि खंजन द्वै,
 कैधौ मनरंजन ए नैन हैं बिहारी के ॥३२॥
 बैठे रंग महलै उमंग भरे आनद सौं,
 अंग की अछेह यों तरंग उफनात है ।
 दै कै गलवाहें नैन नैन सौं मिलाय योंस,
 राहै रूप दोऊन कौ दोऊ बतरात हैं ।
 देखौ हरिदेव तौऊ प्रेम की बिचित्रताई,
 बिरह विथा मैं छिन छिन अकुलात हैं ।
 हाय प्रान प्यारे कहि सांस लेत प्यारी पुनि,
 हाय प्रान प्यारी कहि प्यारौ रहि जात है ॥३३॥
 अथ जड़ता लक्षण—

दोहा—देख अभामत वस्तु कूँ, जड़ हूँ जाय सरीर ।
 सब विवहारन रहित जो, सो जड़ता मत धीर ॥३४॥
 देखत दिष डसी इन लाल की, ख्याल ही ख्याल करी अब येरी ।
 है लकुटी कहु कामरिया, मुरली वनमाल परी वनवेरी ॥
 ऐसी कछू हरिदेव की सोह, कपोलन पै मचली दियै फेरी ।
 जादू भरी कै भरी विष सौं, लट तेरी किधौं अहि भामन येरी ॥
 अथ गर्व लक्षण—

दोहा—बुद्धादिक तै आप कौ, सब तै अधिकौ जान ।
 वैभव निंदै और ताकौ गर्व बखान ॥३६॥

ऊधौ जू जोग दीयौ मन मोहन, सो हम लै निज सीस चढ़ावै ।
 चंदन औ घनसार हूँ तैं, जिय जान कै सार विभूत लगावै ॥
 ऐ पर एक अदेसौ इतौ, हम सो कहि तैं जिय माहि लजावै ।
 राधिका नाथ कहाय धौं हाथ, कहा हरि कूवरीनाथ कहावै ॥३७॥
 अथ विषाद लक्षण—

दोहा—वस्तु भामती हानि तै, निज अनिष्टता मानि ।
 चित मैं बढ़ै विषाद जहि, सो विषाद जिय जानि ॥३८॥
 नीति विधान अनीति गई करि, रावरी प्रीत की रीत हवासी ।
 आनद के घन दीने उड़ाय कै, सोच के घन कीने मवासी ॥
 हाय हितू हरिदेव सुनौं, पजरै छतिया दिन रैन अवासी ।
 जो रस नेह कौ तोर चले अब घोर चले विस हो विसवासी ॥३९॥
 दोहा—जिहि असहनता समैं, किये मादिक तै होय ।
 तन्द्रादिकता माहि हूँ, औत्सुक है सोय ॥४०॥
 कविता-काऊ कह्यौ आनकें आयौ है विदेशी पीय,

सुनतैं ही तीय हीय बढ़ौ है हरस सौं ।
 कहै हरिदेव हरवरात उठ धाई देखि,
 दूर ही तैं दोर द्रिग कीनौ है परस सौं ।
 उयौ उयौ प्रात प्यारो बूझै कुशल हित जन सौं,
 त्यों त्यों होत आतुर उर अंतर तरस सौं ।
 आवत नहीं आवतु मैं मोहन के मोहनी कौ,
 एक ही छिनक भयौ बिधि के बरस सौं ॥४१॥

अथ निद्रा लक्षण—

दोहा—सब इंद्रिन कौ त्याग मन, त्वचा मांहि ठहराय ।
 है सुपनादि अनेक तहि, निद्रा कहियै ताय ॥४२॥
 माई मिलै सपने में मया करि मोहन मेरी गही हंसि ठोड़ी ।
 मोच कै नीवी सु कंचुकी खोलत माल सखी मुकतान की तोड़ी ॥

मैं हू वियोग वरायवे कौ भई, नेसक, बाट सकोच नै छोड़ी ।
हायरी तौ लौ विलाय गई, बहु नीदहू नीद न जोग निगोड़ी ॥४३॥
अथ अपस्मार—

दोहा—वातादिक ग्रह कोप तैं, देवादिक आवेस ।
तजै फैन भुव पात मुख, अपस्मार कंपेस ॥४४॥
कवित्त—सुनतैं ही तान सुध भूल गई प्रानन की,
आयौ मुख फैन पैन आबतु है सासुरी ।
गिरी अकुलाय देखि आई बृजबाला धाय,
कहा भयौ हाय हाय धधकति है पासुरी ।
हा हा हरिदेव मोहि ऊतर विचारि दीजै,
रावरे के पाननि मैं पावत हुलास री ।
बालन के मारिवे कौं बीर बृज मंडल मैं,
बान है कै बरछी ये बिष है कै बासुरी ॥४५॥

अथ सुप्त लक्षण—

दोहा—जाय बुद्ध मन की जबै, त्वचा माहि ठहराय ।
अतसै बिनु सुपनादि जहि, सुप्त कहत है ताय ॥४६॥
उदा०—सोवत जमुना तीर हरि, तँह आई बृज बाल ।
कोऊ मुरली उर ली धरी, हरी कोऊ बनमाल ॥४७॥

अथ विवोध लक्षण—

दोहा—नींद छूटवे ते जु है, इंद्री परम प्रकास ।
तामैं भूक्षेपादि हूँ, सो विवोध बुधरास ॥४८॥
कवित्त—भोर उठ आई केलि मंदिर दुवार प्यारी,
आलस वलित नैन देखि मृग हहरै ।
उन्नत उरोजन पै विथुरे विराजै वार,
टूटे मण हार खुटे चीर अंग फहरै ॥

तैसे हरिदेव राजै आननि प्रस्वेद वृंद,
सुषमा विलोक उठी उपमा की लहरै ।
कैधौ अरविद पै है वृंद मकरंद के ये,
कैधौ चारु चंद पै सुधा के वृत्त छहरै ॥४९॥

अथ अमर्ष लक्षण—

दोहा—अपमानादिक तैं तहाँ, हिदै कोप अधिकाय ।
अरुन नैन करि तरजिदौ, ताहि अमर्ष बताय ॥५०॥
कवित्त—कोऊ कहै पंकज पै मधुप पराग पाग्यौ,
तिनकी तौ भोरी मति ऐसे ई अमाई है ।
कीनौ है बिचार निरधार एक मैंने मुख,
रावरे की रचना बिध रुच सौं बनाई है ॥
ताके सम होयवे कौं फूलौ बड़े भोर हीं सों,
ऐसौ मतिमंद जाकी जान कुटिलाई है ।
कोप कर बिधि नैं अलिद मिस प्यारी अर,
विदन के आनन पै कारिख लगाई है ॥५१॥

अथ अवहिथा लक्षण—

दोहा—कछु मिस करकै अपनौ, मरम छिपावै कोय ।
संगोपन आकार करि, करि अवहिथा है सोय ॥५२॥
इंदु मुखी मुख इंदु निहारत, आई सखी इक पूछन ताकौ ।
आज कहा अधराटक टोवत, भोर ही तैं उठ आरसी ताकौ ।
रात किए गल के अधरा, छद है री महा सजनी दुख जाकौ ।
क्योंरी सखी रति मैं पति के, रद नाहिरी वीर समीर महा कौ ॥

अथ उग्रता लक्षण—

दोहा—दुरजनादि तैं होत जहि, निरदैता अति चित्त ।
बंधनादि कीजै जहाँ, जान उग्रता मिता ॥५३॥

कविता—ऐठी ही रहत बैठी जात उर वलिन के,
 सैठी ऐसी घोर घन सात पनिहारी की ।
 भै दै देति हियौ कियौ मोहन अधीन जातै,
 दीन भई गोपी गाम गोकुल मभारी की ॥
 तापर अनीति देखौ भीत न करत नैक,
 डारी गहि जाल जोर वारी कुल न्यारी की ।
 ज्यों ज्यों वृषभान की दुलारी प्यारी प्यारे की तौ,
 काढ़ौगी मरोर आज वंसी वजमारी की ॥५५॥

अथ मति लक्षण—

दोहा—बहुत सास्त्र चितन किये, होत यथार्थ ज्ञान ।
 तामें अति चातुर्जता, अनय विनय मति जान ॥५६॥
 जन प्रीत प्रतीत न जानै कछू, गुन औगुन वाम कुवाम के जे ।
 निस वासर सोच सनेह रहै, धन धाम धरा तन ताम के जे ॥
 तजरे मन संग सदा जिनको, जग नीच निकाम न काम के जे ।
 बिन दाम गुलाम न रामहू के, मिलै दाम गुलाम गुलाम के जे ॥

अथ व्याधि लक्षण—

दोहा—बिरहादिक संताप तैं, गात क्षीन अति होय ।
 दुख अधिकाय सरीर में, व्याधि बखानै सोय ॥५७॥
 नेह लगाय अनेह भये कित, गेह सुतन यौ तन छीजियै ।
 देह परथौ विरहागन में, पजरै दिन रैन कभू सुध लीजियै ।
 हा हा हितू हरिदेव हमारी, इति विनती चित दै सुन लीजियै ।
 आस लगाय निरास करौ, जिन दै विसवास विसानन कीजियै ॥

अथ उन्माद लक्षण—

दोहा—बिरहादिक तैं होत जिहि, बिन बिचार आचार ।
 वृथा बोलवौ दौरिवौ, सो उन्माद बिचार ॥५८॥

कित वैन बजाई बुलाई लला, अब ज्यों हम सौ न हियै हित हौ ।
 हित हौ तौ गए कित छोड़ जहां, विललात फिरै वन में चित हौ ॥
 चित हौ जू इहा हरिदेव इतै, हमरे पिय प्रान तुम्ही वित हौ ।
 वित हौ दुख दीन दयानिध ये, कित हो कित हो कित हौ कित हौ ॥
 दोहा—मरन भाव बरनें नहीं, रस में बुद्ध निकेत ।
 सूरन को मरवो कहै, जस विस्तारन हेत ॥५९॥

कविता—क्रुद्धित है जुद्ध में विरुद्धे जब उद्ध वीर,
 देख महाधीर कौ धीर हू भडगो ।
 कहैं हरिदेव दिगपालन कै सक पड़ी,
 धक्क लोक पालन कै सोक सिंधु मडगो ॥
 सेस भुज दंडन सौ छूटै जे प्रचंड बान,
 प्रानति को अंत जानि जुद्ध वीर अडगो ।
 भानकुल भूषन के रेषितही इंद्रजीत,
 भेद भांन मंडल कौ छेह पार कढ़गो ॥६०॥

अथ त्रास लक्षण—

दोहा—देख भयानक वस्तु कछू, डर हिय में अधिकाय ।
 कंपादिक है ता समैं, त्रास ताहि कौ गाय ॥६१॥
 कविता—छाड़ कै मथानी नैक आई हौ जहाँ लौ वीर,
 तौ लौ उतकोति कीनै कौतिक से काढ़े हैं ।
 लै लै नवनीत कौ पुनीत मुख मेल मेल,
 चक्रत चितौन में अनूप रूप बाढ़े हैं ।
 देख प्रतिविंब मणिखंभ में डराने जासौं,
 हा हा खात जोरे कर दीन भये ठाढ़े हैं ।
 आऊरी इहां लौ दुर देख तौ दिखाऊ तोय,
 सूकत से संकित सैं कंपत से ठाढ़े हैं ॥६२॥

अथ तर्क लक्षण—

दोहा—कछू पदारथ देखिउ, संसै बढ़ै अपार ।

बहु बिचार मन में करै, सौ वितके निरधार ॥६६॥

कवित्त—कैधौ नव नागरि के उन्नत उरोज दोऊ,

कैधौ हिम हेम कूट सोभ सरसाने हैं ।

कैधौ कुंभ कंचन के पूरत सिंगार रस,

कैधौ जुग सिभु एक ठोर दरसाने हैं ।

कैधौ हरिदेव मैनु भूप कै सिकारी वाज,

पीमन कु ही की ताक लाग कै लुकाने हैं !

कैधौ कलि कुंचन की अवनी अनूप पर,

जोवन महीप नैं सिमाने दोय ताने हैं ॥६७॥

इति श्रीराधिकारमनपदारविंद पानानंदित अलिंद श्रीरती-
राम आत्मज कवि हरदेवविरचितायां रसचंद्रिकायां संचारीभाव
वरनने दशम प्रभा ।



अथ अस्थायीभाव लक्षण—

दोहा—कबहू काहू भाव सौं, होय न जाकी हार ।

सब भावन सिरमौर है, है अत्रीय विकार ॥१॥

जाय नहीं रस बीज है, यही बढ़ै रस होत ।

जैसे तरु बीज सों, तरु को होत उदोत ॥२॥

सो अस्थायी भाव नव प्रकार—

दोहा—रति हांसी अरु सोक, पुन क्रोध उतावरु भीति ।

निदा विस्मै ओर सम, स्थाई भाव प्रतीति ॥३॥

अथ रति लक्षण—

दोहा—इच्छा प्यारी वस्तु की, देखनादि तैं होत ।

मन विकार पूरन जहि, सो रति भाव उदोत ॥४॥

मुसकान की फासी सु जान दर्ई, सो लई मति यौ चख चाहि पगे ।

मधुरे सुर डार चली भुरकी, मुरकी फिर वान से नैन लगे ॥

अब है सुध तोय कछू सजनी, सो चवायनु के चित चाय खगे ।

डगिपा यह रूप अनूपम है ब्रज ठाकुर ठीक ठगेसो टगे ॥५॥

अथ हास्य लक्षण—

दोहा—लीला करि कीजै जहाँ, वचन वेष विपरीत ।

मन विकार पूरन न है, हास स्थाई मीत ॥६॥

खेलत फाग सुहाग भरे, अति भाग भरे अनुराग महारी ।

छीन कै पीत पटी हरिदेव, हंसी मुरकैं वृषभानु दुलारी ॥

फेर लई पिचकी भुक यौं, मिल दीठ सौं दीठ गई सुखकारी ।

लाल के हाथ गुलाल रहौ, अरु वाल के हाथ रही पिचकारी ॥७॥

अथ सोक अस्थाई लक्षण—

दोहा—मिलै अभामत बस्तु जहि, होय भामती भंग ।

तासौं मनो विकार कछू, सोक भाव पर संग ॥८॥

आवतु गाय गुपाल जहाँ, मग जाय परचौ अघहू मुषवाई ।

जानै कहा बृजवासी बिचारे, समाय गये सगरे तिय माई ॥

जात जरे जठरानल मैं, वल हूजियै वेग सहाय कन्हवाई ।

ऐसे सखान की टेर सुनै, करुना कर कौ करुना कछू आई ॥९॥

अथ क्रोध अस्थाई लक्षण—

दोहा—अपमानादिक तैं तहां, प्रतिकूलन मैं आय ।

पूरन मनो विकार नहि, क्रोध भाव सो गाय ॥१०॥

आयो है प्रात पिया रमनी घर, रात कहूं अनतैं रति कीनी ।

ओठन अंजन रेख लसै, अरु भाल पै जावक लोक नवीनी ॥

कोप बढ़्यौ तिय के डर मैं, पिय जान कही बतिया रसभीनी ।

मार भलैं अरविंदन की, बृजचंद कै चंदमुखी तव दीनी ॥११॥

अथ उत्साह अस्थाईभाव लक्षण—

दोहा—सूरतादि तैं होत नहि, पूरन मनो विकार ।

सो उत्साह वखानियै, हेत अपूरन धार ॥१२॥

उदा०—धेनु चराचर कृष्ण वन, गोपालन के संग ।
वत्सासुर कों देखि कै, चढ़ी अरुनई अंग ॥१३॥
अथ भय स्थाई लक्षण—

दोहा—घोरादिक धुन श्रवन सुन निज अपराध देखि ।
मन विकार पूरन न है, सो भय भाव विशेष ॥१४॥
आवै दिसा विदिसान कौ दाहत, है कै प्रचंड भयानक भारी ।
सेस मुषानल की लपटै, जनु जार न जात अकास की भारी ॥
कीजै कहा हरिदेव हहा, लखि होत हियै अकुलाहल भारी ।
वारी कहा वच है भज कै, किन वारी दवागन ये वनवारी ॥१५॥
अथ निदा अस्थाई लक्षण—

दोहा—जहाँ अभामत वस्तु के, दरसनादि सौ होत ।
पूरन मनो विकार नहि, सो भै भाव उदोत ॥१६॥
उदा०—प्रगट भई तव तीर तैं श्रोतन भरी उछाह ।
चढ़ी तरुनिया रुंडकी, जोगनि भरी उछाह ॥१७॥

अथ विसमय लक्षण—
दोहा—देखनादि आश्चर्य, सुमरनादि सौ होत ।
पूरन मनो विकार नहि, विसमयभाव उदोत ॥१८॥
धाये हैं घोर प्रलय के महाघन, आय सबै सो इहाँ जुर भूमैं ।
कोर उपाय किये बृज बोरन, छोर दिये धुरता धुक धूमैं ।
धार लियौ छिगुनी पै लला, गिर नंद के मान सुरेंद के तूमैं ।
सात दिना परचौ मूसलधार, फुहार न एक परी बृज भूमैं ॥१९॥

अथ सम स्थाई लक्षण—
दोहा—धन दारादिक नास तैं, उपजै कछुक विकार ।
सम स्थाई भाव सौ, वरनत सुकवि उदार ॥२०॥
कवित्त—कंचन के वासन की वासना सुहात अब,
कलित कदंबन की कुंजन को जोऊगो ।
गिलम गलीचे गुल गादी गरुर तजि,
पावन पुलन रैन आनंद समोउगो ॥

छांड जग नाते जे प्रेम रस माते संत,
तिनही के संग निस बासर वितोउगो ।
आनंद के कंद बृजचंद के पदारविंद,
है कर अलिंद मकरंद सुख भोऊगो ॥२०॥
इति श्रीराधिकारमन पदारविंद पानानंदित अलिंद श्रीरतीराम—
आत्मज काव हरिदेवविरचितायां रसचन्द्रिकायां अस्थाईभाव—
वनेने नाम एकादश प्रभा ।

अथ शृंगार रस लक्षण—
दोहा—जहाँ दंपति सुख करै, महामोद उर धार ।
सो संजोग सिंगार है, अमित अनंद अंगार ॥२१॥
कवित्त—राधिकारमन आज माधुरी निकुंजन में,
रची विपरीत रति रंग दरकतु है ।
प्यारी भुकभूम मुख चूम लेत प्यारे जू कौ,
प्यारी मुख प्यारौ चूम हिये हरषतु है ॥
कहैं हरिदेव छूटे अधर सुधारस कौ,
टूट टूट मांगपेतैं मोती षरकतु हैं ।
चारु चंद मंडल कौ घेर अंधकार मानौ,
बोच बीच तारन की धार वरषतु है ॥२२॥

अथ वियोग शृंगार रस लक्षण—
दोहा—पिय प्यारी विछुरै परै, हियै विरह भर आय ।
सा वियोग शृंगार कहि, वरनै कवि समुदाय ॥२३॥
वे सुख पुंज भरे जिन कुंज में, तेई भई सुख पुंज कौ वासौ ।
सीतल मंद समीरन को थल, जात दहो दिन रात अवासौ ॥
और कछु कहतैं न बनै, गन फूलन को भयौ सूल सवासौ ।
राग भरे हिय मैं मन मोहन, आन कियौ विरहागम वासौ ॥२४॥
दोहा—विप्रलंभ शृंगार में, दंपति के तन आय ।
दीह दिसा दस होत अब, ते वरनू कविराय ॥२५॥

प्रथम कहूँ अभिलाष, पुनि चिंता सुमरन होय ।
ताते वरनों गुन कथन, फिर उदोग कहि सोय ॥६॥
पुनि प्रलाप उन्माद अरु, जड़ता व्याधि बषान ।
मरन कहत दसई दसा, कबि कोविद जिय जान ॥७॥
अथ अभिलाष लक्षण—

दोहा—इच्छा जो पिय मिलन की रहै सदाई चित्त ।
ताहि दसा अभिलाष कहि, वरनत हैं कवि निरा ॥८॥
होत रहै मन यों हरिदेव जू, जार कै लोक की लाज के फंद कौ ।
कीजै निहारिबौई निस वासर, कोऊ उपाय बनै छर छंद कौ ॥
मोर पखा मन मोहनी मूरति, सोहत हार हिये अरविंद कौ ।
नैन बड़े बड़े वे अरविंद से, इंदु सौ आननि वार गुविंद कौ ॥९॥
वैन वजावत आन कढ्यौ, बहु मैन की सूरत रूप उजारौ ।
गेर गयौ कछू चेटक सौं, छिन हेर इतै मुख फेर निरारौ ॥
लोक की लाज छुटी हरिदेव जू, हौ न कछू कुल कानि सन्हारौ ।
मोहनी डार गयें री गयौ, मन लै गयौ सामरी सूरत बारौ ॥१०॥

अथ चिंता लक्षण—

दोहा—चिंता जो पिय मिलन की, चित्त में रहै समय ।
चिंता तासौ कहत हैं, कवि कोविद सब कोय ॥११॥
सीर समीर करै तन पीर न, वीर अवीर न धीर छुड़ावै ।
षावी मनोजन वान कर्मै, कल कंठन कूज हियौ तरसावै ॥
कवि हूँ है घड़ी धन सौं सजनी, हरिदेव पिया हंस कंठ लगावै ।
फूल की संजन सूल करै औ, सुधाकारि सुध सुधा वरसावै ॥१२॥

अथ सुमरन लक्षण—

दोहा—लखी सुनी यह बात कौ, सुमरन जियमें होय ।
सुमरन ताकों कहत हैं, कवि कोविद सब कोय ॥१३॥
कैसे लिखै वतियां पतिया, हरि जात कर्यौ नहि एकहू अंक है ।
लाजत ही लखि बेली जवै, अब तेई वढावति हे मण संक है ॥
होत पराभम है जब मोहन, देखत है हमैं रावर अंक है ।

ते अब पाछिल वैर सम्हार कै, जारत कोकिल कंज मयंक है ॥१४॥
अथ गुन कथन लक्षण—

दोहा—प्यारी पिय गुन विरह में, लोचन गोचर होय ।
गुन बरनन तासौ कहें, ग्रंथन में कवि लोय ॥१५॥
वह फूली रहै अति आनंद में, नित वास सदा हरि के उरली ।
कर कंजन के रस कढ्यौ करै, जहि प्रान पिया अधरान भरली ॥
हरिदेव जू भागन कौ लहनौ, हम कौ तो बियोग विथा सुरली ।
धन है वनमाल तुही जग में, अरु कै धन एक तुही मुरली ॥१६॥
खंजन दौर दुरै वन में मृग, छोरनि के मद मोद निकंद से ।
दीन कीये मन मीननि के, छवि छीन अलिंद के वृंद अमंद से ॥
चेटक से है चलाक महा, हरिदेव की सौ जिय आनंदकंद से ।
आन गढ़े न कढ़े सजनी, फिर नैन बड़े बड़े वे अरविंद से ॥१७॥
अथ उदोग लक्षण—

दोहा—विरह विथा में विकल अति, और न कछू सुहाय ।
कहैं ताहि उदोग हैं, जे प्रवीन कविराय ॥१८॥
फूले पलास हुलास हरै, अलि गुंज करै छतियान दरेरे ।
तीर सौ मंद समीर लयौ, अरु काल सी कोयल प्रान छरेरे ॥
फूल तिसूली के सूल भये, विरहागन जात दुकूल जरेरे ।
कंत विना भये अंतक से, ये वसंत के वासर वीर करेरे ॥१९॥

अथ प्रलाप लक्षण—

दोहा—विरह विथा बाढ़ै अधिक, पियप्यारी तन आन ।
बिन समुझै बक उठै, ताहि प्रलाप बखान ॥२०॥
कवित्त—मार दैरी दादुर ये दूनौ दुख दैन लागे,

चातिक चवाइन की चैचन को जारदै ।
जारदै री झिल्ली गन भीगुर भपाक दैना,
जोहि जोहि जुगनू जमातन को वारदै ।
वार दैरी वेग दै बिलोक वग पांतन कौ,
वांन ऐसी वारद की बूंदन को ढारदै ।

ढार दैरी घोर घनघोर न सतावै अरु,
सौर न मचावै इन मोरन को मारदै ॥२१॥

अथ उन्माद लक्षण—

दोहा—उत्कंठा तै मोह मय, वृथा करै कछू काज ।
जान दसा उन्माद सो, कहै सवै कविराज ॥२२॥

कवित्त—जा दिन ते परे वाकी दीठि मन मोहन जू,

भई है विकल कहूँ कल न परत है

घर तैं निकसि कभूँ जात बन वीथन में,

बन तैं निकस फेर घर कौँ फिरत है ॥

ऐसैं ई विहात दिन रैन हरिदेव की सौँ,

धीर न धरात सुधि और की हरत है ।

व्याकुल विहाल बाल लालन निहारे विभ्रम,

तरुन तमालन कौँ भेट वो करत है ॥२३॥

दोहा—जहाँ विरह संताप तैं, जड़ हूँ जाय सरीर ।

जड़ता तासौँ कहत हैं, जे कविता में धीर ॥२४॥

कवित्त—देखि आई लालन हवाल वृज वालन कौँ,

दीह दुख जालन कौँ होत है न अनुमान ।

तन की सम्हार न सम्हार पर भूषन की,

ऐसी वै सम्हार भूली सुध खानपान ।

अलिन के होस ओ हवास हू हराने सब,

आहि सुन कहैं अभी जीहे नैक जी है जान ।

अब लौँ तिहारी सौँ तिहारी प्रान प्यारी जू के,

पिऊ पिऊ बोल बोल राखे है पपीहा प्रान ॥

अथ व्याधि लक्षण—

दोहा—बाढ़े वेदन मदन की, कसता होय सरीर ।

व्याधि दसा ताको कहें, जे कवि तामैं धीर ॥

कवित्त—नैसक संदसौ एक लाई मन मोहन जू,

सोहनी सी सूरत क धारवे कौँ कल हौ ।

आये बढ औध तुम आपनी पियारी जू सौँ,
तापर विहारी पल चार इक विचल हौ ।

बाके नैन बारजतै बारध अपार बाढ़ै,

पार न लहोंगे फेर जान अब चल हौ ।

बूढ़ेगौ देश जामैं नाह न अदेस कछू,

नीकै कै वृजेस आप ठाढ़े हाथ मल हौ ॥

इति श्रीराधिकारमन पदार्बिंद मकरंद पानानंदित अलिंद
श्रीरतीराम आत्मज कवि हरिदेवविरचितायां रसचन्द्रिकायां
शृंगाररसवर्नने नाम द्वादश प्रभा ।

अथ हास्य रस लक्षण—

छप्पय—विकृत वेष जो किये सोई आलिवन जानहु ।

अलवल वचन रसाल सोई उदीपन मानहु ॥

वदन नेत्र संकाचनादि अनुभाव विचारो ।

उतवंठा चपलादि हरष संचारी धारौ ॥

हास्य अस्थाई कहत है श्वेत वर्ण सुखराशि लहि ।

प्रथम देवता तासु कौँ हास्य सुरस हरिदेव कहि ॥१॥

अथ करुणा रस लक्षण—

छप्पै—आलिवन है सोच्य तासु गुन है उदीपन ।

प्रभु निदा तन ताप जान अनुभाव महीपन ॥

सात्वक स्थंवादि और मुनि अश्रु विचारी ।

अपस्मार निर्वेद दीनता मोह संचारी ॥

सोक अस्थाई भाव है वरन कबूतर के कहौ ।

जमराज देवता जानि कै करुणा रस कवि जन लहौ ॥२॥

अथ सेन्द्र रस लक्षण—

छप्पय—आलिवन है सस्त्र सस्त्र उदीपन जानहु ।

आनन नैन कपोल अरुन अनुभाव वखानहु ॥

सात्वक स्वेद वखान बुहर बरनौ संचारी ।

गर्व उग्रता मति और आवेग विचारी ॥
 क्रोध स्थाईभावं अरु रक्त वर्ण जिय जानियौ ।
 रुद्र देवता तास कौ ताहि रुद्र रस मानियौ ॥३॥

अथ वीर रस लक्षण—

छप्पय—आलिवन वर वीर जान उद्दीपन ये सुन ।
 रंगभूमि सस्त्र अस्त्र तंवूर तूर धुन ॥
 सूरापन रणधीर प्रभा अनुभाव बखानहु ।
 सात्विक कहि पुलिकादि हरष संचारी जानहु ॥
 पाई है उत्साह जहि सुवरन वरन बखानियै ।
 जाकौ देव महेंद्र है ताहि वीर रस जानियै ॥४॥

अथ भयानक रस लक्षण—

छप्पय—जो भय कौ अस्थान सोई आलंबन जानहु ।
 ताके कर्म कराल सोई उद्दीपन मानहु ॥
 चकित नैन अनुभाव वरन सात्विक सुरभंगा ।
 अपस्मार कंपेस आदि बिभवारी संगी ॥
 भय अस्थाई भाव अरु कज्जल वर्न बखानियै ।
 भय रस को कवि कहत है काल देवता जानियै ॥५॥

कवित्त—श्री वृंदावन परम धाम नारायन,

वैस कुल वंस हंस उज्ज्वल वरन मैं ।
 गदी श्रीगौड़ेश्वर संप्रदा अस्थाय तहाँ,
 कोटि दया हरी त्रय ताप के हरन मैं ।
 श्रीराधारमन देव निज दासता की छाप,
 मेर दीनी भाल गुरु आश्रय करन मैं ।
 महा दीन हीन गति कीनी है सुनाथ नाथ,
 कोटि कोटि दंडवत तिनके चरन मैं, ॥६॥